Discover your divinity with us
A/C Showroom
ज्ञान गंगा ॐ मूर्ति माला केन्द्र
उजाला भवन स्टेशन रोड, दुर्ग
0788-4030383, 3293199
भगवान के वस्त्र, श्रृंगार मूर्तियां एवं समस्त पूजन सामग्री संगमरमर व पीतल की मूर्तियां राशि रत्न एवं उपरत्न उपलब्ध

राष्ट्र एवं राज्य के प्रगति पथ पर...

समय दर्शन

ESTD : Since 2011

रायपुर एवं दुर्ग से प्रकाशित

संस्थापक : स्व. श्रीमती निलिमा खड़तकर

निष्पक्ष निर्भीक खबरों के साथ

श्री
दुर्ग शहर में सुप्रसिद्ध ज्योतिषाचार्य
माँ दुर्गा उपासक मां बगुलामुखी, माँ कामख्या, माँ भद्रकाली, माँ शतचंडी की असीम कृपा साधना द्वारा समस्त समस्याओं का मार्ग दर्शन हेतु
पं. एम.पी. शर्मा/
मो. 8109922001
फीस 251/- मात्र
पता:- श्री दुर्गा ज्योतिष कार्यालय सिकोला भाठा, सब्जी मार्केट के सामने, धमधा नाका, दुर्ग

वर्ष 14, अंक 203 पृष्ठ 8, मूल्य 3.00 रूपये | दुर्ग, रविवार 18 मई 2025 | www.samaydarshan.in

मुख्यमंत्री विष्णु देव साय के साथ जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में आम नागरिक हाथ में तिरंगा लेकर यात्रा में शामिल हुए

देशभक्तिपूर्ण गीतों के साथ जशपुर के चराईडांड में निकाली गई तिरंगा यात्रा

भारत माता की जय और तिरंगे झंडे की जयकार से गूंज उठा पूरा वातावरण

रायपुर (समय दर्शन)। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के साथ जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में आम नागरिक हाथ में तिरंगा लेकर यात्रा में शामिल हुएमुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के साथ जनप्रतिनिधि और बड़ी संख्या में आम नागरिक हाथ में तिरंगा लेकर यात्रा में शामिल हुए।

ऑपरेशन सिंदूर की सफ्लता पर आज जशपुर जिले के दुलदुला विकासखंड के चराईडांड में देशभक्ति से ओत-प्रोत तिरंगा यात्रा निकली गई। मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने गांव के शिव मंदिर से आम बगीचा तक निकली गई इस भव्य यात्रा का शुभारंभ किया। मुख्यमंत्री के साथ हाथों में तिरंगा लिए जशपुर विधायक श्रीमती रायमुनि भगत , नगर पालिका अध्यक्ष श्री अरविन्द भगत, जिला पंचायत अध्यक्ष श्री सालिक साय, जिला पंचायत उपाध्यक्ष श्री शौर्य प्रताप सिंह जूदेव, भरत सिंह, श्री विक्रमादित्य सिंह जूदेव, श्री सुनील गुप्ता, श्री कृष्णा राय, सरगुजा कमिश्नर श्री नरेन्द्र कुमार दुग्गा, आईजी श्री दीपक झा, कलेक्टर श्री रोहित व्यास, एसएसपी श्री शशि मोहन सिंह, जिला पंचायत सीईओ श्री अभिषेक कुमार, जनप्रतिनिधिगण, पंचायत एवं नगरीय निकायों के प्रतिनिधि, अधिकारी, आम नागरिक, बच्चे एवं जवान तिरंगा यात्रा में शामिल हुए।

लोग हाथ में तिरंगा लेकर उत्साहपूर्वक यात्रा में शामिल हुए। यात्रा के दौरान 'भारत माता की जय', 'वंदे मातरम्' और 'जय हिंद' के नारों से पूरा वातावरण गूंज उठा।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने इस अवसर पर कहा कि ÷यह यात्रा न केवल तिरंगे के प्रति सम्मान है, बल्कि यह हमारे शहीदों को सच्ची श्रद्धांजलि भी है। यह अभियान देश की एकता, अखंडता और संप्रभुता को सशक्त बनाने का प्रतीक है।÷ऑपरेशन सिंदूर' के अंतर्गत पूरे जिले में एक साथ तिरंगा यात्रा आयोजित की गई, जिसका उद्देश्य युवाओं में देशभक्ति की भावना का संचार करना, जनसहभागिता के माध्यम से राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना है।

मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय ने बड़ी संख्या में उपस्थित युवाओं, मातृशक्ति एवं नागरिकों को संबोधित करते हुए कहा कि कम समय में इतनी बड़ी भागीदारी इस बात का प्रमाण है कि देश की जनता एकजुट होकर राष्ट्र के लिए खड़ी है। उन्होंने सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रकट किया।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि देश के प्रधानमंत्री के मार्गदर्शन में 'ऑपरेशन सिंदूर' के तहत भारतीय सेना ने अभूतपूर्व सफ्लता प्राप्त की है। यह अभियान उन शहीद जवानों को समर्पित है जिन्होंने अपनी शहादत से राष्ट्र का मान बढ़ाया है। उन्होंने कहा कि उरी हमले के बाद जिस प्रकार से सेना ने जवाब दिया, उसी प्रकार हाल ही में 22 अप्रैल को जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में पाकिस्तान समर्थित आतंकियों द्वारा की गई कायरतापूर्ण घटना का करारा जवाब दिया। मुख्यमंत्री ने पहलगाम की घटना में छत्तीसगढ़ के सपूत सहित अनेक लोगों की निर्ममहत्या का उल्लेख करते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। मुख्यमंत्री ने कहा कि प्रधानमंत्री एवं रक्षामंत्री के कुशल नेतृत्व में सीमापार आतंकी ठिकानों पर कार्रवाई कर उन्हें ध्वस्त किया गया। इस तिरंगा यात्रा में समाज के सभी वर्गों की सहभागिता यह संदेश देती है कि भारत एक है, और राष्ट्रहित में सभी नागरिक एकजुट हैं। उन्होंने कहा कि आतंकवाद के खिलाफभारतीय सेना द्वारा चलाए गए ऑपरेशन सिदूंर की सराहना हर देशवासी कर रहा है। भारतीय सेना द्वारा देश की रक्षा हेतु अदम्य साहस का परिचय देते हुऐ देश की सीमाओं की रक्षा अत्यन्त वीरता के साथ की जा रही है। भारतीय सेना के प्रति सम्मान प्रकट करने और देश की एकता अखंडता के लिए जिले के सभी नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायतों में तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा में जनप्रतिनिधि, पंचायत एवं नगरीय निकायों के प्रतिनिधि, अधिकारी, आम नागरिक, बच्चे, महिलाएं, बुजुर्ग, युवा बड़ी संख्या में शामिल हुए और देश के प्रति अपनी एकजुटता एवं सम्मान प्रकट किया।

भारत ने आतंकवाद को दिया करारा जवाब, दुनिया को दिया संदेश : उपराष्ट्रपति धनखड़

नई दिल्ली (एजेंसी)। भारत के उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ ने शुक्रवार को नई दिल्ली के भारत मंडपम में आयोजित एक कार्यक्रम के दौरान राष्टहित, सुरक्षा और शिक्षा से संबंधित महत्वपूर्ण मुद्दों पर अपने विचार साझा किए। उन्होंने कार्यक्रम में उपस्थित छात्रों, शिक्षकों और गणमान्य व्यक्तियों को संबोधित करते हुए कहा कि अब वह समय नहीं रहा जब हम अपने हितों के विरोधी देशों को यात्रा या आयात के माध्यम से सशक्त करते रहें। जयपुरिया इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट के वार्षिक दीक्षांत समारोह को संबोधित करते हुए उपराष्टपति ने कहा, अब समय आ गया है जब हममें से प्रत्येक को आर्थिक राष्टवाद के बारे में गहराई से सोचना चाहिए। हम अब उन देशों की अर्थव्यवस्थाओं को सुधारने के लिए यात्रा या आयात के माध्यम से अपनी भागीदारी के कारण खर्च नहीं कर सकते जो संकट के समय हमारे खिलाफ खड़े हो जाते हैं। हर व्यक्ति राष्ट की सुरक्षा में मदद करने के लिए सशक्त है और हम व्यापार, व्यवसाय, वाणिज्य, विशेष रूप से सुरक्षा के मुद्दों में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इसलिए मेरा दृढ़ विश्वास है कि हमें हमेशा एक बात ध्यान में रखनी चाहिए, और वह है- %राष्ट प्रथम%। हर चीज को राष्टवाद के प्रति समर्पण के आधार पर देखा जाना चाहिए। भारतीय सेना के ऑपरेशन सिंदूर की सराहना करते हुए धनखड़ ने भारत के सशस्त्र बलों की सराहनी की। उन्होंने कहा कि मैं ऑपरेशन सिंदूर की उल्लेखनीय सफलता के लिए सभी सशस्त्र बलों और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दूरदर्शी नेतृत्व को अपना सलाम करता हूं।

ओडिशा में आसमानी बिजली ने मचाया कहर, 14 लोगों की दर्दनाक मौत; 6 की हालत गंभीर

भुवनेश्वर (एजेंसी)। ओडिशा से दर्दनाक खबर सामने आई है। जहां बिजली गिरने से एक ही दिन में 14 लोगों की मौत हो गई है, जबकि छह अन्य का गंभीर हालत में अस्पतालों में इलाज चल रहा है। बताया जा रहा है कि कोरापुट जिले के लक्ष्मीपुर प्रखंड अंतर्गत ओडियापेंठ ग्राम पंचायत के पर्तिगुडा गांव में कालबैसाखी के कारण आंधी के साथ बारी बारिश हुई।

इसी दौरान खेत में काम कर रहे लोगों ने पास में मौजूद एक झोपड़ी में शरण ली। तभी झोपड़ी में बिजली गिर गई। बुद्री माडिंगा,उनकी पोती कासा माडिंगा और अंबिका काशी की मौके पर ही मौत हो गई। इसी तरह सिमिलीगुड़ा प्रखंड की चारंगुल पंचायत अंतर्गत खालपड़ी गांव के कुम जानी के पुत्र दास जानी (32) की बिजली गिरने से मौत हो गई। नवरंगपुर जिले के उमरकोट प्रखंड के बेनोरा गांव में बिजली गिरने से एक नाबालिग की मौत हो गई, जबकि उसके दादा का गंभीर हालत में अस्पताल में इलाज चल रहा है। मृतकों की पहचान बुद्री माडिंगा (60), कासा माडिंगा (16) और अंबिका काशी (35) के रूप में हुई है। बुद्री के पति हिंगु माडिंगा और पांच अन्य को गंभीर हालत में लखीमपुर के सामुदायिक स्वास्थ्य

केंद्र (सीएचसी) में भर्ती कराया गया है।

बेनोरा पंचायत के शंकरदा गांव के चैतराम मांझी (35) और उनके भतीजे ललित माझी (15) मक्का सुखाने के लिए बनारा गांव गए थे। फर्श पर मकई सुखाते समय दोपहर करीब 3.30 बजे तेज हवा चली और वर्षा होने लगी। इसी दौरान बिजली गिरने से चैतराम और ललित की मौत हो गई। ढेंकानाल जिले के कंकड़ाहाड़ ब्लॉक के दसीपुर पंचायत पंचायत के कुसुमुंडिया गांव की सुरुषि बिस्वाल (40) की बिजली गिरने से मौत हो गई है। दोपहर बाद सुरुषि घर के सामने थी तभी अचानक बिजली और वह झुलस गई। उन्हें परजंग सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया गया। गंजाम जिले के बेलगुंटा थाना क्षेत्र के केबिरी बरहमपुर में बिजली गिरने से एक महिला की मौत हो गई और एक महिला घायल हो गई। केबिरी बरहमपुर गांव के पूर्णचंद्र गौड़ की बेटी रीता गौड़ (30) बिजली की चपेट में आने से झुलस गई थी, जिसे नजदीकी अंबाटोटा अस्पताल ले जाया गया जहां डॉक्टरों ने रीता को मृत घोषित कर दिया।

इसी तरह तनरादा गांव की नर्मदा पोलाई (38) अपने घर के सामने बैठी थी, तभी बिजली गिरने से गंभीर रूप से झुलस गई। उसका भंजनगर अस्पताल में इलाज चल रहा है। कविसूर्यनगर थाना अंतर्गत ए.बारीदा गांव के लक्ष्मण प्रधान के 13 वर्षीय पुत्र ओम प्रकाश प्रधान की बिजली की चपेट में आने से मौत हो गई है।

मैं आर्किटेक्ट बनना चाहता था, वकील बनकर पिता का सपना पूरा किया

अभिनंदन समारोह में बोले सीजेआई बीआर गवई

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीफ जस्टिस ऑफ इंडिया बीआर गवई के सम्मान में बार काउंसिल ऑफ इंडिया की ओर से शनिवार को अभिनंदन समारोह आयोजित किया गया। इस सम्मान समारोह में बीआर गवई ने अपने 40 साल के वकालत के करियर के बारे में कहा कि मैं वे वकील नहीं बनना चाहते थे। उनका सपना आर्किटेक्ट बनने का था। अभिनंदन समारोह में उन्होंने %बार काउंसिल% का धन्यवाद किया। उन्होंने कहा कि यह समारोह भारत में विविधता की सच्ची तस्वीर है। हमारा संविधान हमारे देश की विविधता के लिए बहुत उपयुक्त है। हमारे देश में क्षेत्रीय,

भौगोलिक, आर्थिक विविधता है। जब मैं अपनी 40 साल की यात्रा पर विचार करता हूं, तो पाता हूं कि मैं अपनी इच्छा से वकील नहीं बना। मैं पहले आर्किटेक्ट बनना चाहता था। मैं आज भी अपने उस पैशन को फॉलो करता हूं क्योंकि मैं बॉम्बे हाई कोर्ट की इंफ्रास्ट्रक्चर कमेटी का अध्यक्ष था। उन्होंने कहा कि मेरे पिता ने सामाजिक क्रांति के लिए बीआर अंबेडकर के आंदोलन में भाग लिया। स्नातक होने के बाद, वह वकील बनना चाहते थे, लेकिन जेल में रहने के कारण वह एलएलबी की परीक्षा नहीं दे सके। इसलिए, वह चाहते थे कि उनका एक बेटा वकील बने। मैंने उनके सपने को पूरा किया। बार काउंसिल ऑफ इंडिया के अध्यक्ष मनन कुमार मिश्रा ने कहा कि मुख्य न्यायाधीश गवई ने हाल ही में कहा कि सीजेआई की भूमिका संस्था के लिए दीर्घकालिक दृष्टिकोण की मांग करती है। सीजेआई के कर्तव्य केवल सर्वोच्च न्यायालय तक सीमित नहीं हैं, बल्कि पूरे देश में संपूर्ण न्यायिक प्रणाली तक फैले हुए हैं। पूरे कानूनी समुदाय की ओर से, मैं उन्हें दूरदर्शी लक्ष्यों की पूर्ति के लिए पूर्ण सहयोग और प्रतिबद्धता का आश्वासन देता हूं।

पंजाब और हरियाणा से महिला यूट्यूबर समेत 6 गिरफ्तार, पाकिस्तान पहुंचाते थे खुफिया जानकारी

सिरसा (एजेंसी)। हरियाणा की चर्चित यूट्यूबर ज्योति मल्होत्रा को पाकिस्तान के लिए जासूसी करने के आरोप में गिरफ्तार किया गया है। इसी के साथ सुरक्षा एजेंसियों ने पंजाब और हरियाणा से छह जासूसों को पकड़ने में कामयाबी हासिल की है। यह लोग हरियाणा के कैथल, हिसार, नूह और पानीपत के साथ ही पंजाब के मलेरकोटला से पकड़े गए हैं। इन लोगों पर भारत की गोपनीय सैन्य जानकारियां पाकिस्तान को भेजने का आरोप है।

जानकारी के अनुसार इसमें यूटयूबर ज्योति मल्होत्रा तथा उसके पांच साथी शामिल हैं। ज्योति को हिसार के न्यू अग्रसेन एक्सटेंशन से गिरफ्तार किया गया है। ज्योति हिसार की रहने वाली है। आईबी टीम द्वारा ज्योति मल्होत्रा को पूछताछ के लिए सीआईए स्टाफ हिसार कार्यालय में ले जाया गया है। ज्योति ने पुलिस को बताया कि वह वर्ष 2023 में वीजा लगवाने के लिए पाकिस्तान हाई कमीशन में गई थी। वहां उसकी मुलाकात अहसान उर रहीम उर्फ दानिश से हुई। उसने दानिश का मोबाइल नंबर ले लिया। दोनों की बातें होने लगी। उसके बाद उसने दो बार पाकिस्तान की यात्रा की थी। ज्योति ने बताया कि पाकिस्तान में अहसान उर रहीम के कहने पर उनके जानकार अली अहवान से मिली। अली अहवान ने उसके घूमने फिरने और रहने का प्रबंध किया। अली अहवान ने पाकिस्तानी इंटेलीजेंस तथा सिक्योरिटी के अधिकारियों से उसकी मुलाकात कराई। ज्योति ने बताया कि वह राणा शहबाज और शाकिर से भी मिली। उसने शाकिर का मोबाइल नंबर भी लिया और अपने मोबाइल में जट रंधावा के नाम से सेव कर लिया ताकि किसी को शक न हो। वापस भारत आने के बाद व्हाटस एप, स्नैप चैट, टेलिग्राम के माध्यम से उन लोगों के संपर्क में रहने लगी। देश विरोधी सूचनाएं उन तक पहुंचाने लगी।

जासूसी मामले में जिन आरोपियों को अरेस्ट किया गया है, उनमें 32 साल की गजाला भी शामिल है। गजाला दानिश के साथ वित्तीय लेन-देन में शामिल थी और वीजा प्रक्रिया में मदद कर रही थी। इसके अलावा यामीन मोहम्मद भी शामिल है, जो दानिश को हवाला और अन्य माध्यमों से पैसे पहुंचाने में मदद करता था।

बॉबे हाईकोर्ट ने खारिज कर दी थी याचिका

'समाज का चरित्र बिगड़ा, लोग अब सच के लिए खड़े नहीं होते', पार्षद हत्या मामले में सुप्रीम कोर्ट की टिप्पणी

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने शनिवार को महाराष्ट्र के भिवंडी के पार्षद हत्या मामले में सुनवाई की। मामले में गवाहों की सुरक्षा को लेकर खतरा जताते हुए सुप्रीम कोर्ट ने अहम टिप्पणी की। कोर्ट ने कहा कि समाज का चरित्र बिगड़ रहा है इसलिए आजकल लोग सच के लिए खड़े होने को तैयार नहीं हैं। शीर्ष अदालत ने महाराष्ट्र सरकार से पूछा कि वह 2017 के भिवंडी पार्षद हत्या मामले में मौखिक गवाही के लिए बड़ी संख्या में गवाहों पर क्यों निर्भर है?

सुप्रीम कोर्ट में न्यायमूर्ति सूर्यकांत और न्यायमूर्ति एन कोटिश्वर सिंह की पीठ ने कांग्रेस पार्षद की हत्या मामले में मुख्य साजिशकर्ता प्रशांत भास्कर महात्रे की जमानत याचिका पर सुनवाई की। पीठ ने राज्य सरकार के वकील को महत्वपूर्ण गवाहों की

सूची प्रस्तुत करने का निर्देश दिया। ताकि गवाहों से बात करके आगे की कार्रवाई तय की जा सके।

जब राज्य सरकार के वकील ने कहा कि उन्हें आरोपपत्र में बताए गए 200 गवाहों में से 75 गवाहों से पूछताछ करने की जरूरत है, तो पीठ ने कहा कि समाज के बिगड़ते चरित्र के कारण आजकल लोग सच के लिए खड़े होने को तैयार नहीं हैं। आप इतने सारे गवाहों की गवाही पर क्यों भरोसा कर रहे हैं? ये गलत नहीं है कि गैंगस्टर गवाहों पर दबाव डाल सकते हैं और गवाह बाद में अपने बयान से मुकर सकते हैं। क्योंकि इस देश में गवाहों की सुरक्षा के लिए कोई इंतजाम नहीं है।

पीठ ने कहा कि जब राज्य सरकार मामले में महत्वपूर्ण गवाहों की सूची पेश कर देगी तो हम मुकदमे को शीघ्र पूरा करने के लिए समय-सीमा तय करेंगे। राज्य सरकार के वकील ने कहा कि बंबई हाईकोर्ट ने आरोपी की जमानत याचिका की सुनवाई की थी तो 14 में से 10 गवाह अपने बयान से पलट गए थे। पीठ ने वकील से आरोपी महात्रे के आपराधिक इतिहास के बारे में पूछा। वकील ने बताया कि आरोपी पर दर्जन भर से अधिक मामले दर्ज हैं।

किसी चमत्कार की उमीद मत कीजिए

आरोपी महात्रे के वकील ने कोर्ट से कहा कि उनके खिलाफदर्ज कई मामलों में उन्हें बरी कर दिया गया है। इस पर पीठ ने तंज कसा कि किसी चमत्कार की उम्मीद मत कीजिए। हम चाहते हैं कि मुकदमे में तेजी आए। समाज में शांति रहे। अगर महात्रे जेल से बाहर आ गए तो बहुत से लोगों की रातों की नींद उड़ जाएगी। न्यायमूर्ति कांत ने कहा कि अदालत तकनीकी तौर पर मामले की निगरानी नहीं कर रही है, बल्कि पर्यवेक्षण कर रही है, ताकि मामले में सुनवाई में तेजी लाई जा सके।

इससे पहले सात फरवरी को बॉम्बे हाईकोर्ट ने आरोपी की जमानत याचिका खारिज कर दी थी। कोर्ट ने कहा था कि आरोपियों के इकबालिया बयानों के आधार पर महात्रे को मुख्य साजिशकर्ता कहा जा सकता है। हाईकोर्ट ने कहा कि रिकॉर्ड पर मौजूद सामग्री से प्रथम दृष्टया आवेदक के खिलाफ मुख्य साजिशकर्ता होने का मामला बनता है। उसने अन्य आरोपियों को पीड़ित पर हमला करने के लिए अपने साथ शामिल किया।

भिवंडी-निजामपुर नगर निगम में तीन बार कांग्रेस पार्टी से पार्षद रह चुके मनोज महात्रे पर 14 फरवरी 2017 को हमला किया गया था, इससे वह गंभीर रूप से घायल हो गए थे।

हाई स्कूल सेटप सुधार बाद ही - विज्ञान में भौतिक रसायन बायो तीनो की नियुक्ति कर, पदोन्नति व स्थानांतरण करे - सबसे पहले युक्तियुकरण करे - लालबहादुर साहू

रायपुर(समय दर्शन)। कर्मचारी अधिकारी स्थानांतरित संगठन के प्रांत अध्यक्ष लालबहादुर साहू प्रांतीय प्रतिनिधि भुवनेश्वर प्रताप , डी के घोसले, महादेव साहू , बी एल मंगेशकर, सरोज यादव , ए के मंडावी इत्यादि ने छात्र हित मे युक्तियुक्तकरण के निर्णय को सही बताया है इससे ग्रामीण छेत्र के विद्यार्थियों को जंहा पोस्ट खाली है शिक्षक उपलब्ध होंगे इसलिए युक्तियुक्तकरण करे लेकिन गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हेतु शिक्षको के नियुक्ति विषयवार दर्ज संख्या 2008 सेटप में बिना परिवर्तन के करे , युक्तियुक्तरण के बाद संसोधन छात्र हित में सिर्फ हाई स्कूल विषय विज्ञान में नियुक्ति करने हेतु - विज्ञान के तीनों विषय भौतिक,रसायन व बायो के लिए करे अन्य में किसी भी प्रकार का संसोधन नही , उसके बाद में पदोन्नति कार्य व स्थानांतरण प्रक्रिया शुरू करे रिक्त पदों पर पहला अधिकार युक्तियुक्तकरण से प्रभावित शिक्षको का हो छ्ग्रह्ल को ज्ञापन सौंप मांग किया है । विसंगति पूर्ण व जल्दबाजी में व्याख्याता /प्राचार्य पदोन्नति व स्थानांतरण प्रक्रिया भौतिक , रसायन पीजी व 27000 स्थानांतरित के लिए न्यायसंगत नही है बड़ी विसंगति उत्पन्न हों जाएंगे जिसे सुधारना बाद में असंभव है इस मामले पर मुख्यमंत्री ,शिक्षा सचिव से मुलाकात कर ज्ञापन सौंपेंगे छ ग राज्य सरकार से कर्मचारी के गैर वित्तीय मांग स्थानांतरित की वरिष्ठता प्रथम नियुक्ति से ब्रष्ठ नियम लागू करते वरिष्ठता व संवैधानिक अधिकार से वंचित हो रहे है बिना पदोन्नति के ही 1 ही पद पर रिटायर हो जाएंगे 1998 ,2005 व 2008 बेच वाले 15, 20 , 24 वर्ष से अनुभवी जो राज्य सरकार की गलत नीति से 2016 नियुक्ति वाले से कनिष्ठ हो रहे हैं ऐसे अनुभवी स्थानांतरित का ब्रष्ठ नियम से वरिष्ठता का समायोजन करते प्राचार्य व व्याख्याता में पदोन्नति लाभ देने व सिर्फहाई स्कूल सेटअप में आंशिक सुधार कर भौतिक, रसायन व बायो क्क्न तीनों योग्यताधारी का व्याख्याता में विज्ञान में नियुक्ति, पदोन्नति करने शिक्षक व छात्र हित में डीपीआई से मांग किये है नए नीति लागू होने के बाद ही व्याख्याता /प्राचार्य में पदोन्नति करने संगठन ने राज्य सरकार को अपने मांगों पर निर्णय लेने आग्रह किये है पुनः आग्रह करेंगे जब राज्य सरकार सभी नियम बदल कर नए नियम लागू कर रहे है उदाहरण के तौर पर - संविलयन का नियम नही था संविलयन कर दिया , 8 वर्ष को 2 वर्ष कर दिया ,ह्वद्यस्र पेंशन का नियम नही था ह्वद्यस्र पेंशन का प्रावधान कर दिया , लैब शिक्षक जिसमे सिर्फविज्ञान संकाय नियुक्ति का नियम है सुप्रीम कोर्ट से बाहर किये प्राथमिक शाला में पदस्थ किये ब्क्चस्र वालो को हटाकर लैब शिक्षक में नियुक्ति कर समायोजन का निर्णय सरकार द्वारा लिया जा चुका है तो 27000 स्थानांतरित व भौतिक रसायन व्याख्याता से भेदभाव क्यो ? वरिष्ठता व विज्ञान विषय सेटप पर भी सुधार करे ताकि संविलयन के पहले व बाद में जो भेदभाव व विसंगतिपूर्ण नीति लागू था दूर हो व नियम में एकरूपता हो ताकि पेंशन की गणना प्रथम नियुक्ति से लागू हो

संक्षिप्त समाचार

अवैध कब्जा हटाने गये राजस्व टीम पर कब्जाधारियों ने किया पथराव

बसना(समय दर्शन)। बसना ब्लॉक के ग्राम चोरभट्ठी सराईपाली में बीते शनिवार को राजस्व टीम पुलिस दल-बल के साथ अवैध कब्जा हटाने पहुंची थी। साथ ही टीम ने बेदखली करने जेसीबी मशीन भी लेकर पहुंचे थे। इसी दौरान बेदखली कार्रवाई के दौरान एक महिला जेसीबी के सामने जबरदस्ती कूद पड़ी और चोटिल हो गयी।सहसा महिला के छुष्टक्कसे टकराने से घायल हो गई। जिन्हें डायल 112 से अस्पताल भिजवाया गया है। घटना की वीडियो सोशल मीडिया में तेजी से वायरल हो रही है। इसके बाद वहां मौजूद ग्रामीण बच्चे छुष्टक्क पर पथराव कर कांच तोड़ डाले।

अवैध कब्जा हटाने पहुंची थी टीम ।

न्यायालय तहसीलदार बसना से जारी कब्जा वारंट के तहत उक्त भूमि तेजराम पिता शशिधर की है। जिसमें गंगाधर, श्वेत, तथा सत्यानंद द्वारा खसरा नंबर 601/2 रकबा 0.10 हेक्टेयर पर अनाधिकृत रूप से कब्जा पाया गया है। जिसमें बेदखली आदेश पारित किया गया है। लेकिन, न्यायालय के आदेश को अवहेलना कर दिए थे। इसके बाद प्रार्थी को कब्जा दिलाने वारंट जारी किया गया था। जिसके तहत बेदखली किया जा रहा था। लेकिन, अवैध कब्जाधारियों ने काफी उपद्रव मचाई। उपद्रवियों ने जेसीबी पर पथराव किया, जो फुटेज में देखा जा सकता हैं।

गंजपारा और म्युनिस्पिल में प्राइमरी हिन्दी माध्यम स्कूल आरंभ करें : क्रिष्टोफर पॉल

राजनांदगांव (समय दर्शन)। नई शिक्षा निति को प्रदेश के सरकारी स्कूलों में लागू किया जा चुका है, वहीं मातृभाषा में प्राथमिक शिक्षा देने वाले स्कूलों को बंद कर दिया जा रहा है, जबकि नई शिक्षा नीति में यह स्पष्ट उल्लेख है कि प्राथमिक शिक्षा मातृ भाषा में ही दिया जाएगा।

गंजपारा में स्थित हिन्दी माध्यम स्कूल को जबरन बंद कर वहां अंग्रेजी माध्यम स्कूल आरंभ कर दिया गया, वहीं म्युनिस्पिल स्कूल में भी प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूल बंद कर अंग्रेजी माध्यम स्कूल आरंभ कर दिया गया, जबकि शासन से इन दोनों हिन्दी माध्यम स्कूलों को बंद करने का आज पर्यन्त आदेश नहीं दिया है।

माननीय उच्च न्यायालय बिलासपुर ने भी इन बंद किए गए प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूलों को आरंभ करने वर्ष 2023 को आदेश दिया था, जिसके पश्चात शासन ने भी इन जबरन बंद किए गए प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूलों को आरंभ करने का आदेश दिया है। बावजूद इसके राजनांदगांव के जिला शिक्षा अधिकारी इन दोनों स्थानों पर प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूल आरंभ करने में कोई रूचि नहीं दिखा रहे है।

छत्तीसगढ़ पैरेंट्स एसोसियेशन के प्रदेश अध्यक्ष क्रिष्टोफर पॉल विगत एक वर्ष से जिला शिक्षा अधिकारी को लिखित आवेदन कर इन दोनों स्थानों में जबरन बंद किए गए प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूलों को आरंभ करने का आग्रह कर रहे है, लेकिन इन दोनों स्थानों में अब तक प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूल आरंभ करने की कोई कवायद नजर नहीं आ रही है।

श्री पॉल का कहना है कि प्रायवेट स्कूलों और कुछ राजनीतिक दबाव के कारण इन दोनों स्थानों में प्राथमिक हिन्दी माध्यम स्कूल आरंभ नहीं किया जा रहा है, जो कोर्ट के आदेश की अवलेहना है।

श्री पॉल ने बताया कि इस मामले में उनके द्वारा जल्द माननीय उच्च न्यायालय बिलासपुर में डीईओ के खिलाफ कंटेम्ट याचिका दायर किया जावेगा।

परसाही में तिरंगा यात्रा में शामिल हुए ग्रामीण

पाटन (समय दर्शन)। ग्राम पंचायत परसाही मे ओपरेशन सिंदूर के विजय उपलक्ष मे तिरंगा यात्रा निकला गया जिसमे यात्रा मे शामिल सरपंच श्री मति लेखनी देशमुख उपसरपंच आशीष साहू जनपद सदस्य राम सुमेर ठाकुर, सभी पंच व समस्त ग्रामवासी शामिल हुए.

लोकतंत्र की आधारशिला है हमारा संविधान : कांग्रेस

राजनांदगांव (समय दर्शन)। संविधान सभी को समानता का अधिकार देता है, सभी के लिए न्याय और निष्पक्षता सुनिश्चित करता है। संविधान हमारे लोकतंत्र की आधारशिला है और हमारे राष्ट्र को जोड़ने वाला सूत्र है। हमारे संविधान के निहित न्याय, समानता, स्वतंत्रता और बंधुत्व के मूल्यों की याद दिलाती है। संविधान की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है। जिसको लेकर शहर जिला कांग्रेस व ग्रामीण कांग्रेस कमेटी के संयुक्त तत्वावधान में 17 मई शनिवार को संविधान बचाओं रैली निकाली गई।

शहर जिला कांग्रेस कमेटी के महामंत्री अमित चंद्रवंशी ने बताया कि छग प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष दीपक बैज के निर्देशानुसार शहर कांग्रेस अध्यक्ष कुलबीर सिंह छाबड़ा व जिला ग्रामीण कांग्रेस अध्यक्ष भागवत साहू के नेतृत्व में शनिवार 17 मई को जिला मुख्यालय में संविधान बचाओ रैली गई। शहर के जयस्तंभ चौक से निकली जो मानव मंदिर चौक, सिनेमा लाइन, गुड़ाखु लाइन, जूनी हटरी होते हुए वापस जयस्तंभ चौक में रैली का समापन हुआ।

पूर्व मंत्री धनेश पाटिला ने कहा कि बड़ा ही सोचनीय विषय है कि आज हमारे संविधान पर खतरा नजर आ रहा है, संविधान को बदलने की नाकामी कोशिश कर रही है, केन्द्र में बैठी मोदी सरकार संविधान में बदलने का प्रयास किया जा रहा है। देश में लूट, हत्या, बलात्कार जैसी घटनाएं हो रही है, महिलाओं पर अत्याचार का अपराध बढ़ रहा है। हमारा संविधान को बचाना है इसके लिए हमें जन-जागरूकता बहुत ही जरूरी है।

जिला ग्रामीण कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भागवत साहू ने कहा कि संविधान निर्माता डा. बाबा साहेब अम्बेडकर का जीवन पूरा संघर्ष मय रहा। बाबा साहेब अर्थशास्त्री, आधुनिकता के ज्ञाता थे, उन्होंने अपने जीवन में जो कठिनाईयों के साथ छूआछूत देखी थी, उनको मिटाने और समाज को संगठित कर समानता का अधिकार दिलाने संविधान की रचना की, जिसमें सभी वर्गों को समाहित किया आज जो माताएं, बहनें बढ़-चढ़कर हिस्सा ले रही है वह हमारे संविधान के कारण है। एआईसीसी के आव्हान पर जिला स्तरीय संविधान बचाओ यात्रा निकाली गई। आज राष्ट्रविरोधी ताकते जिस प्रकार से षडयंत्र रचकर संविधान को बदलने की कोशिश कर रहे वह गलत है। आज हम संकल्पित है कि जो संविधान बचाने के लिए। संविधान की रक्षा करना हमारा कर्तव्य है, संविधान सभी को समानता का अधिकार देता है, सभी के लिए न्याय और निष्पक्षता सुनिश्चित करता है। इस दौरान सभा को पूर्व महापौर हेमा देशमुख, रमेश डाकलिया, किसान कांग्रेस अध्यक्ष मदन साहू, नगर निगम नेता प्रतिपक्ष संतोष पिल्ले, सागर ताम्रकार ने संबोधित किया।

शासकीय प्राथमिक शाला बिलखंड में तिरंगा यात्रा निकाली गई

शासकीय प्राथमिक शाला बिलखंड के छात्र छात्राओं और पालकों द्वारा देश के प्रति अपनी एकजुटता और सम्मान प्रकट किया

बसना(समय दर्शन)। बसना विकासखण्ड के अंतिम छोर वनांचल मे बसा ग्राम बिलखण्ड के शासकीय प्राथमिक शाला में आपरेशन सिंदूर अभियान के यहत देश भक्ति से ओतप्रोत होकर तिरंगा यात्रा निकाला गया। इस अवसर पर शासकीय प्राथमिक शाला बिलखंड के प्रधान पाठक विजय कुमार धृतलहरे सहायक शिक्षक परमेश्वर और शाला विकास समिति के अध्यक्ष अभ्यास कुमार भोई और सभी छात्र छात्राओं के पालक, माताओं बड़ी संख्या में शामिल हुए और देश प्रति अपनी एकजुटता और सम्मान प्रकट किया। तिरंगे के सम्मान में आज तिरंगा यात्रा की शुरुआत के विभिन्न ग्राम, ग्राम पंचायतों और नगरी निकायों में हो रहा है। इस यात्रा के दौरान भारत माता की जय, वंदेमातरम और जय हिन्द के नारों से सम्पूर्ण वातावरण देशभक्ति से गूंज उठा। प्रधान पाठक विजय कुमार धृतलहरे ने संबोधित करते हुए कहा कि, यह तिरंगा यात्रा न केवल तिरंगा के प्रति सम्मान है, बल्कि यह हमारे शहिदों को सच्ची श्रद्धांजलि भी है। आतंकवाद के खिलाफ भारतीय सेना द्वारा चलाए गए आपरेशन सिंदूर की सराहना हर देशवासी कर रहा है। जिसमें मुख्य रूप से बच्चों के पालक रुपलाल पटेल,पिताम्बर निषाद, जितेन्द्र चौहान,पुनयबाई चौहान, विमला भोई, विद्यानंदनी चौहान आदि सभी छात्र छात्राओं उपस्थित रहे।

अल्वा फाउंडेशन ने लिया सदस्यों के साथ विशेष बैठक

राजनांदगांव (समय दर्शन)। ऑल वॉलंटरी एसोसिएशन फाउंडेशन द्वारा रायपुर में एक विशेष बैठक का आयोजन किया गया, जिसमें संगठन के सभी सक्रिय सदस्य शामिल हुए। इस बैठक का मुख्य उद्देश्य सदस्यों के आपसी समन्वय को मजबूत बनाना तथा समाजहित एवं कृषि क्षेत्र से जुड़े विभिन्न योजनाओं पर चर्चा करना था।

फाउंडेशन के संस्थापक हेमशंकर जेठमल साहू जी ने सभी सदस्यों का स्वागत करते हुए कहा- अल्वा फाउंडेशन का उद्देश्य केवल सेवा करना नहीं, बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाना है। हमें किसानों, युवाओं और महिलाओं के लिए नए अवसर तैयार करने हैं और उन्हें आत्मनिर्भर बनाना है। बैठक में निम्न बिंदुओं पर चर्चा हुई, जिसमें कृषि और एग्री बिजनेस से जुड़े नए प्रोजेक्ट जैसे- ड्रोन ट्रेनिंग सेंटर, सॉइल टेस्टिंग लैब का विस्तार, मिलेट्स क्लस्टर फार्मिंग की योजना, ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक जागरूकता अभियान चलाना, युवाओं के लिए कौशल विकास (स्किल ट्रेनिंग) और स्टार्टअप गाइडेंस, प्रत्येक सदस्य को अपने क्षेत्र में एएलवीए के उद्देश्यों को जन-जन तक पहुंचाने की जिम्मेदारी। अंत में सभी सदस्यों ने अपने सुझाव दिए और सामूहिक रूप से अल्वा फाउंडेशन के माध्यम से समाज में बदलाव लाने तथा योजनाओं को जमीनी स्तर पर लागू करने का संकल्प लिया।

आपरेशन सिंदूर अंतर्गत सिरपुर में तिरंगा यात्रा का भव्य आयोजन

कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक , जिला पंचायत सीईओ सहित भ्रमण दल के सदस्य भी हुए शामिल

महासमुन्द (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक नगरी सिरपुर में आज 'आपरेशन सिंदूर' के तहत एक भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस गौरवपूर्ण अवसर पर जिला प्रशासन एवं पुलिस विभाग के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में देशभक्ति से ओतप्रोत वातावरण देखने को मिला।

तिरंगा यात्रा में कलेक्टर विनय लंगेह, पुलिस अधीक्षक आशुतोष सिंह, जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी एस. आलोक सहित भ्रमण दल के 5 सदस्य शामिल हुए। यात्रा का शुभारंभ सिरपुर के ऐतिहासिक स्थल से हुआ और यह शहर के प्रमुख चौक, चौराहों तथा गलियों से होते हुए आगे बढ़ी। इस रैली में स्काउट-गाइड के बच्चों, विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राओं, स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने भी बढ़-चढ़कर भाग लिया। सभी प्रतिभागियों के हाथों में तिरंगा लहराते हुए, देशप्रेम नारों और देशभक्ति गीतों के साथ वातावरण को राष्ट्रीय एकता की भावना से भर दिया।

रैली के दौरान सभी ने अनुशासित एवं उत्साहपूर्ण ढंग से हिस्सा लिया। लोगों के चेहरों पर देश के प्रति समर्पण और गर्व की झलक स्पष्ट रूप देखा जा सकता था। कलेक्टर विनय लंगेह ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं और नागरिकों में देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना है।

नागरिकों ने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि सिरपुर जैसी ऐतिहासिक नगरी में इस प्रकार के आयोजन से युवाओं को अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत से जुड़ने का अवसर मिलता है।

कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सभी नागरिक एकजुट हो के साथ किया गया, जिसमें सभी उपस्थित जनों ने एक स्वर में भारत माता की जय घोष,वंदे मातरम के साथ भाग लिया।

गरीब बच्चे का इलाज के लिए जनसहयोग से जुटाए 80 हजार, अस्पताल में जाकर लिया आर्थिक मदद, आग में बुरी तरह जल गए है बच्चे

पाटन (समय दर्शन)। ग्राम बोरेंदा में रहने वाले बच्चे वासुदेव निर्मल पखवाड़े भर पहले आगजनी के शिकार हो गए थे। जिसका इलाज जिला चिकित्सालय धमतरी में कराया जा रहा है। बच्चे के मां बाप नहीं है। उसके इलाज में खर्च के लिए पैसा भी नहीं है। ऐसे में ग्राम के और पाटन ब्लॉक के कुछ लोगों ने जनसहयोग का हाथ बढ़ाया। कमलेश वर्मा उपाध्यक्ष जनपद पंचायत पाटन के पहल पर आर्थिक सहयोग के लिए युवाओं को टीम सामने आई। करीब 80 हजार एकत्र कर वासुदेव निर्मलकर को देखने जिला चिकित्सालय धमतरी गया एवं परिवार के लोगों से मिलकर हाल-चाल जाना एवं इलाज का खर्च के लिए हर संभव प्रयास का मदद किया गया। इस अवसर पर कामेश कश्यप सरपंच ग्राम पंचायत बोरेंदा ,उपसरपंच आकाश यादव , पूर्व सरपंच नरेंद्र साहू , नारद पाल ,कमलेश वर्मा उपाध्यक्ष जनपद पंचायत पाटन, देवेंद्र साहू , भागवत निषाद अध्यक्ष ग्रामीण एवं गौतम कौर उपाध्यक्ष ग्रामीण साथ में देवेंद्र साहू नरेश साहू संकुल समन्वयक जनपद पंचायत पाटन राधेश्याम साहू रोजगार सहायक दीनू साहू ऑपरेटर कामेश ठाकुर योगेंद्र साहू सागर पांडे ए हरीश पाल एवं ग्रामवासी उपस्थित थे ।।

अपर कलेटर ने की राजस्व प्रकरणों की समीक्षा, गुणवाापूर्ण निराकरण के दिए निर्देश

मुंगेली(समय दर्शन)। कलेक्टर कुन्दन कुमार के निर्देशानुसार अपर कलेक्टर एवं प्रभारी अधिकारी भू-अभिलेख गिरधारी लाल यादव के द्वारा सभी राजस्व अधिकारियों का राजस्व प्रकरणों के निराकरण के सम्बन्ध में वीडियो कॉन्फ्रेंस के माध्यम से समीक्षा किया गया। उन्होंने समय-सीमा से बाहर के लंबित सभी राजस्व प्रकरणों को 07 दिवस के भीतर निराकरण करने निर्देशित किया। उन्होंने प्रत्येक न्यायालय की मदवार एक-एक प्रकरणों की समीक्षा की और कार्ययोजना बनाकर लंबित प्रकरणों को गुणवत्तापूर्ण निराकरण करने निर्देशित किया। अपर कलेक्टर ने सीमांकन, विवादित एवं अविवादित नामांतरण, बंटवारा, त्रुटि सुधार, नक्शा, बटांकन में प्रगति लाने, अभिलेख शुद्धता, खातों का डिजिटल हस्ताक्षर, मसाहती ग्रामों का सर्वेक्षण, नारंगी भूमि, फॉर्मर रजिस्ट्री का कार्य शतप्रतिशत पूर्ण करने के निर्देश दिए। इस दौरान सभी अनुविभागीय अधिकारी (रा.), तहसीलदार, नायब तहसीलदार अपने रीडर सहित, भू-अभिलेख के अधीक्षक, सहायक अधीक्षक एवं कार्यालयीन स्टॉफवीडियो कॉन्फ्रेंस में जुड़े हुए थे।

शौक पुरा करने के लिए तीन दोस्तो ने दिया लूट की घटना को अंजाम

शराब पीने के लिए पैसा नही होने से राह चलते व्यक्ति को किया लूट

24 घंटे के अंदर बालोद पुलिस ने तीनो बदमाषों को किया गिरफ्तार

आदतन है तीनो आरोपी ,पूर्व में भी है अपराधिक रिकार्ड

बालोद (समय दर्शन)। प्रार्थी ने थाना उपस्थित होकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि यह किलकारी क्लीनिक बालोद में काम करता है रोज अपने गांव धनगांव से अपने मोटर सायकल टीवीएस स्पोर्टस क्रमांक सीजी 24 टी 8197 से आना जाना करता है। रोज की तरह दिनांक 14.05.2025 को काम पर आया था जो रात्रि 07:15 बजे अपने मोटर सायकल से अपने घर जा रहा था, नयापारा बालोद पाईपास रोड में रात्रि 07:30 बजे पहुंचा था उसी समय मोटर सायकल हीरोहोण्डा स्पेलेण्डर सीजी 07 एल 4282 में सवार तरूण निर्मलकर व उनके अन्य दो साथी प्रार्थी के मोटर सायकल के सामने आरोपी अपने मोटर सायकल को खड़ा कर रोककर मां बहन की अश्लील गाली गुप्तार तथा हाथ मुक्का से मारपीट किये है, व नगदी रकम 5,500 रू जिसमें 500-500 रू का नोट था को लूट लिये है और तीनो बल पूर्वक अपने मोटर सायकल में चलो नही तो जान से मार देगें की धमकी देकर मोटर सायकल में बैठाकर कपिलेश्वर मंदिर की ओर ले जा रहा था, रास्ता में बचाव बचाव आवाज लगाने पर आरोपीगण नयापारा बालोद कपिलेश्वर मंदिर जाने के मोड के पास मोटर सायकल धीरे होने से प्रार्थी कूदने का प्रयास किया तो चारो मोटर सायकल सहित गिर गये। आरोपीगण मोहल्ला वासियों के भीड़ को देखते हुए प्रार्थी को छोड़कर भाग गया। मारपीट करने से प्रार्थी के पीठ मस्तक दोनो हाथ, कोहनी में चोट आया है कि रिपोर्ट पर अपराध क्रमांक 198/25 धारा 309(6),140(3),126,296,351(2) बीएनएस कायम कर विवेचना में लिया गया है। मामले की गंभीरता को देखते हुऐ श्रीमान पुलिस अधीक्षक बालोद श्री योगेश पटेल के मार्गदर्शन में, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक बालोद मोनिका ठाकुर एवं पुलिस अनुविभागीय अधिकारी बालोद श्री देवांश सिंह राठौर के पर्यवेक्षण में थाना प्रभारी बालोद निरीक्षक रविशकर पाण्डेय द्वारा थाना स्तर पर तत्काल टीम तैयार किया गया। गठित टीम द्वारा प्रकरण के नामजद आरोपी तरूण निर्मलकर का लोगो को प्रार्थी के बताये अनुसार हुलिया बताकर, व मुखबिर लगाकर पता तलाश किया, आरोपी तरूण मिलने से पुछताछ करने पर अपने अन्य साथीयों ईश्वर यादव, प्रियांशु ढीमर के साथ घटना को कारित करना बताया । प्रकरण के आरोपी तरूण निर्मलकर से घटना में प्रयुक्त एक मोटर सायकल हीरो होण्डा स्पेलेण्डर सीजी 07 एल 4282 व चमड़े का बेल्ट व लूट के रकम 500-500 का 4 नोट कुल 2000 रू एवं आरोपी ईश्वर यादव से लूट के रकम बटवारा में मिले 500-500 रू का 3 नोट कुल 1500 रू एवं प्रियांशु ढीमर को लूट के रकम बटवारा में मिले 500-500 का 4 नोट कुल 2000 रू कुल जुमला नगदी 5,500 रू आरोपियों के कब्जे से जप्त किया गया है। आरोपियों को दिनांक 16.05.2025 के क्रमशः 13.10, 13.20, 13.35 बजे गिरफ्तार किया कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

मुख्यमंत्री पहुंचे सीतागांव समाधान शिविर

132 केवी सब स्टेशन सहित कई घोषणाएं

रायपुर (समय दर्शन)। मुख्यमंत्री साय शुक्रवार को मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी जिले के मानपुर विकासखंड अंतर्गत ग्राम सीतागांव में आयोजित समाधान शिविर में शामिल हुए। इस अवसर पर उनके साथ उप मुख्यमंत्री एवं जिले के प्रभारी मंत्री विजय शर्मा तथा मुख्यमंत्री के प्रमुख सचिव सुबोध सिंह भी उपस्थित थे। सुशासन तिहार के तृतीय चरण अंतर्गत आज के समाधान शिविर में क्षेत्र की 8 ग्राम पंचायतों—सीतागांव, मदनवाड़ा, कारेकट्टा, हलांजुर, हुरेली, कंदाडी, कोहका, हलोरा—को क्लस्टर के रूप में शामिल किया गया था। मुख्यमंत्री साय ने इन पंचायतों के हितग्राहियों से सीधा संवाद कर शासन की योजनाओं के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन की जानकारी ली और उनकी समस्याएं सुनीं। मुख्यमंत्री ने अपने संबोधन में कहा कि पूरे प्रदेश में सुशासन तिहार 2025 मनाया जा रहा है। हमारी सरकार को कार्यभार संभाले डेढ़ वर्ष हुआ है और इस दौरान हम निरंतर

जनता के बीच पहुंचकर योजनाओं के प्रभाव और लाभ का आकलन कर रहे हैं। मुख्यमंत्री साय ने कहा कि यह सरकार पारदर्शिता और जनभागीदारी की भावना से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि राज्य में सरकार बनने के बाद 18 लाख प्रधानमंत्री आवास स्वीकृत किए गए हैं, जिनमें से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों के लिए 15 हज़ार विशेष मकानों की स्वीकृति दी गई है। महतारी वंदन योजना का लाभ सभी पात्र बहनों को दिया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार ने 3100 रुपये प्रति क्विंटल की दर से धान खरीदी की है। जमीन की रजिस्ट्री के साथ अब नामांतरण की प्रक्रिया भी स्वत: पूर्ण होगी। हक त्याग अब केवल 500 रुपये में हो रहा है। प्रदेश के 1460 ग्राम पंचायतों में अटल डिजिटल सेवा केंद्र स्थापित किए गए हैं, जिन्हें आगामी एक वर्ष में सभी ग्राम पंचायतों तक विस्तारित किया जाएगा।

मुख्यमंत्री साय ने बताया कि नया रायपुर में स्थापित आदिवासी संग्रहालय जनजातीय संस्कृति के संरक्षण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। राज्य सरकार नक्सलवाद को समाप्त करने के लिए लगातार प्रयासरत है और मार्च 2026 तक इसे पूर्ण रूप से समाप्त करने का लक्ष्य निर्धारित किया गया है। इस अवसर पर मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने सीतागांव उप स्वास्थ्य केंद्र को प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र के रूप में उन्नयन करने, मोहला में बस स्टैंड और छात्रावास का निर्माण करने, सीतापुर में हाई स्कूल का हायर सेकेंडरी स्कूल में उन्नयन करने और अंबागढ़ चौकी क्षेत्र में 132 केवी सब स्टेशन की स्थापना की घोषणा की। मुख्यमंत्री साय ने पात्र हितग्राहियों को हितग्राहीमूलक सामग्री का वितरण कर लाभान्वित किया । इसमें मत्स्य विभाग द्वारा जाल का, खाद्य विभाग द्वारा राशन कार्ड का, प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत 'खुशियों की चाबी' का वितरण किया गया। शिविर में स्वच्छ भारत मिशन अंतर्गत हितग्राहियों को लाभ दिया गया तथा स्वच्छता दीदियों को सम्मानित किया गया। पेंशन योजना के हितग्राही भी लाभान्वित हुए। मुख्यमंत्री साय ने क्षेत्र के मेधावी छात्र-छात्राओं को भी पुरस्कृत किया। उप मुख्यमंत्री विजय शर्मा ने समाधान शिविर में लोगों से संवाद करते हुए कहा कि सरकार लोगों की समस्याओं के निराकरण और उनकी मांगों को पूरा करने के लिए गंभीरता से काम कर रही है। इसके लिए एक महीने पहले से आवेदन लेकर परीक्षण किया गया और अब लोगों को शिविरों के आयोजन के माध्यम से लाभ प्रदान किया जा रहा है। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय स्वयं समाधान शिविरों में पहुंचकर मैदानी स्तर पर समस्याओं के समाधान की पड़ताल कर रहे हैं। उप मुख्यमंत्री शर्मा ने बताया कि रजिस्ट्री, नामांतरण और हक त्याग की प्रक्रिया में क्रांतिकारी सुधार किए गए हैं। अब लोगों को कागज़ लेकर इधर-उधर नहीं भटकना पड़ेगा।

किसान एवं युवा बेरोजगारों के लिए स्वर्णिम अवसर

छत्तीसगढ़ में तेलघानी मशीन बनेगी आत्मनिर्भरता का संबल

रायपुर (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ तेलघानी विकास बोर्ड के अध्यक्ष जितेन्द्र साहू ने आज रायपुर स्थित साहू समाज के कार्यालय कृष्णाधाम परिसर में स्थापित तेलघानी मशीन का निरीक्षण किया। इस अवसर पर उन्होंने मशीन की तकनीकी कार्यप्रणाली, तिलहन प्रसंस्करण की प्रक्रिया तथा विपणन (मार्केटिंग) के तौर-तरीकों को गंभीरतापूर्वक समझा। निरीक्षण के पश्चात श्री साहू ने इसे किसानों और बेरोजगार युवाओं के लिए एक अभिनव रोजगार माध्यम बताया। श्री साहू ने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की दूरदर्शी पहल के तहत छत्तीसगढ़ तेलघानी विकास बोर्ड राज्य की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए नवाचारों को अपनाते हुए ठोस कदम उठा रहा है। यह योजना किसानों और युवाओं को आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनेगी। यह पहल न केवल स्वदेशी उत्पादन को प्रोत्साहित करेगी, बल्कि स्थानीय संसाधनों के समुचित उपयोग की दिशा में भी एक प्रेरणादायी उदाहरण प्रस्तुत करेगी। निश्चित रूप से आने वाले समय में यह योजना छत्तीसगढ़ को आत्मनिर्भरता एवं समृद्धि की नई दिशा प्रदान करेगी। श्री साहू ने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार की प्राथमिकता है कि राज्य के किसानों को तिलहन उत्पादन की ओर प्रेरित कर उन्हें शासकीय योजनाओं का समुचित लाभ दिलाया जाए। इस दिशा में सरकार का प्रयास है कि किसानों को न केवल तिलहन उत्पादन में सहायता दी जाए, बल्कि आधुनिक तेल पेराई एवं विपणन तकनीकों से भी जोड़ा जाएगा, जिससे उनकी आय में उल्लेखनीय वृद्धि हो सकेगी। तेलघानी विकास बोर्ड के अध्यक्ष श्री साहू ने बताया कि बेरोजगार युवाओं को आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में तेलघानी मशीनों की स्थापना के माध्यम से उन्हें स्थायी रोजगार से जोड़ा जाएगा। इसके लिए युवाओं को विभागीय प्रशिक्षण प्रदान किया जाएगा, जिससे वे इस क्षेत्र में दक्ष होकर स्वयं का व्यवसाय प्रारंभ कर सकें और साथ ही अन्य लोगों को भी रोजगार उपलब्ध करा सकें। इस अवसर पर साहू समाज के अनेक विशिष्टजन उपस्थित रहे। जिनमें प्रमुख रूप से छत्तीसगढ़ प्रदेश साहू संघ के सत्यप्रकाश साहू, धमतरी जिले से अवनेंद्र साहू, कोण्डागांव जिले से राजेश साहू, राजनांदगांव से भागवत साहू, गरियाबंद से नारायण साहू, मुंगेली से पुहुप राम साहू, बलौदाबाजार से सुनील साहू, दुर्ग से नंदलाल साहू, रायपुर जिले से नारायण लाल साहू विशेष रूप से सम्मिलित हुए।

छत्तीसगढ़ में मौसम ने एक बार फिर बदला, 19 जिलों में यलो अलर्ट

रायपुर (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ में मौसम ने एक बार फिर करवट ली है। बीते कुछ दिनों से जारी तेज आंधी, तूफान और बारिश ने लोगों को गर्मी से राहत जरूर दी है, लेकिन इसके साथ सावधानी बरतने की भी जरूरत बढ़ गई है। मौसम विभाग ने राज्य के 19 जिलों में यलो अलर्ट जारी किया है।

दक्षिण छत्तीसगढ़ में तेज हवाएं और बारिश की संभावना- मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, आगामी चार दिनों तक दक्षिण छत्तीसगढ़ में मध्यम वर्षा और तेज हवाएं चलने की संभावना है। गरज-चमक और बिजली गिरने की भी चेतावनी दी गई है।

राजधानी रायपुर सबसे गर्म- गुरुवार को रायपुर का अधिकतम तापमान 41.8 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया, जो पूरे प्रदेश में सबसे अधिक रहा। वहीं, जगदलपुर में न्यूनतम तापमान 24.5 डिग्री रहा। रायपुर में दोपहर बाद बादल छाने और हल्की बौछारें पड़ने की संभावना जताई गई है।

इन जिलों में यलो अलर्ट- रायपुर, दुर्ग और बस्तर संभाग के 19 जिलों में बिजली गिरने, तेज हवा चलने और हल्की बारिश को लेकर यलो अलर्ट जारी किया गया है। लोगों को खुले स्थानों पर ना रहने और मौसम से जुड़ी चेतावनियों पर नजर रखने की सलाह दी गई है।

बिलासपुर संभाग में भी गर्मी का असर

बिलासपुर: अधिकतम 40.3°C, न्यूनतम 29.7°C

मुंगेली: 40.3°C

रायगढ़: 40.5°C

गौरेला-पेण्ड्रा-मरवाही: 39.2°C

इन क्षेत्रों में फिलहाल गर्मी बरकरार है, लेकिन मौसम विभाग के अनुसार बादलों की मौजूदगी और हल्की बारिश से अगले कुछ दिनों में राहत मिल सकती है।

सलाह: रहें सतर्क, मौसम अपडेट पर रखें नजर- मौसम का मिजाज तेजी से बदल रहा है। ऐसे में मौसम विभाग ने नागरिकों से अपील की है कि वे बिजली चमकने के दौरान खुले में न जाएं, पक्के मकानों में शरण लें, और यात्रा से पहले मौसम की जानकारी अवश्य लें। छत्तीसगढ़ में मौसम राहत और चुनौती दोनों लेकर आया है। जहां बारिश से गर्मी कम हुई है, वहीं तेज हवाओं और बिजली गिरने का खतरा अब भी बना हुआ है। सावधानी और सतर्कता ही इस मौसम में सबसे जरूरी हथियार हैं।

दो अलग-अलग थाना क्षेत्र से दोपहिया वाहन पार

रायपुर। अलग-अलग थाना क्षेत्र से अज्ञात चोर ने दो दोपहिया वाहन पार कर दिया। दोनों ही मामलों में पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। मिली जानकारी के अनुसार पहले मामले में विजय नगर भनपुरी निवासी प्रार्थी आरए चारी 49 वर्ष ने खमतराई थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 एमए 9380 को डब्ल्यूआरएस कालोनी बाजार के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 15 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। वहीं दूसरे मामले में ग्राम तुलसी नेवरा निवासी हरीश चंद्र ध्रुवे 49 वर्ष नेवरा थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 डीजी 8310 को नेवरा स्टेट बैंक के पास खड़ी किया था।

कलेक्टर ने खाद एवं बीज उठाव को लेकर अधिकारियों की ली बैठक

खाद बीज को लेकर किसानों ना हो कोई दिक्कत, समय पर पर्याप्त भंडारण हो : कलेक्टर डॉ सिंह

रायपुर (समय दर्शन)। कलेक्टर डॉ गौरव सिंह ने जिले में खाद बीज के उठाव को लेकर संबंधित विभागों की समीक्षा बैठक ली। उन्होंने कहा कि प्रतिदिन का लक्ष्य तय करें और खाद और बीज का उठाव लक्ष्य कर सुनिश्चित करें। कलेक्टर ने अधिकारियों को किसानों को उनकी मांग के अनुरूप खाद-बीज की उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए है। कलेक्टर ने कृषि तथा अन्य संबंधित विभागों के अधिकारियों को निर्देश दिया कि किसानों को किसी भी प्रकार की

तकलीफ न हो। उन्होंने कहा कि किसानों से आग्रह किया जाए की अभी से खाद और बीज का उठाव किया जाए। उन्होंने किसान क्रेडिट कार्ड के नियमों को आसान कर अधिक से अधिक किसानों को इसका लाभ दिलाने के भी निर्देश समिति के कर्मचारियों को दिये। कृषि विभाग के मैदानी अमला और अधिकारी को निरंतर अपने-अपने क्षेत्र का दौरा करने के साथ किसानों सें संपर्क रखने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने कहा कि खाद-बीज के भंडारण व उठाव पर निगरानी रखें। इस बैठक में जिला पंचायत के सीईओ कुमार बिश्वरंजन, उप संचालक कृषि के.के कश्यप, सहकारी बैंक की सीईओ अपेक्षा व्यास सहित अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

150 हितग्राहियों को राशन कार्ड, जॉब कार्ड, श्रम पंजीयन कार्ड सहित अन्य योजनाओं का मिला लाभ

रांधना समाधान शिविर में शामिल हुए प्रभारी मंत्री लखन लाल देवांगन

रायपुर (समय दर्शन)। सुशासन तिहार में प्रभारी मंत्री तथा वाणिज्य एवं उद्योग एवं श्रम विभाग मंत्री लखन लाल देवांगन आज कोण्डागांव जिले के माकड़ी विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत रांधना में आयोजित समाधान शिविर में शामिल हुए। शिविर में उन्होंने विभिन्न विभागों के स्टॉल में अधिकारियों से सुशासन तिहार में प्राप्त आवेदन के निराकरण की जानकारी ली। इस दौरान उन्होंने अधिकारियों से आवेदनों पर त्वरित एवं पारदर्शी ढंग से निदान करने के निर्देश दिए। इस अवसर पर कोंडागांव विधायक एवं बस्तर विकास प्राधिकरण की उपाध्यक्ष सुश्री लता उसेंडी भी उपस्थित रहीं।

श्रम मंत्री लखन लाल देवांगन ने शिविर को संबोधित करते हुए कहा कि राज्य सरकार के सुशासन के 15 माह पूरे हो रहे हैं। सुशासन तिहार के तहत गांव गांव में ग्रामीणों की समस्याओं के निदान के लिए शिविर का आयोजन किया जा रहा है। इस पहल से शासन गांव-गांव में

पहुंच रही है और ग्रामीणों की समस्याओं से सीधे संवाद किया जा रहा हैं। कई मांगों का मौके पर ही निराकरण किया जा रहा है वहीं कुछ मांगों का निर्धारित समय सीमा में कार्यवाही की जाएगी। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री विष्णु देव साय जेठ माह की भरी दोपहरी में में गांव-गांव पहुंचकर ग्रामीणों से सीधे संवाद कर योजनाओं के जमीनी स्तर पर क्रियान्वयन का फीडबैक ले रहे हैं और समस्याओं का निराकरण भी कर रहे हैं। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने देश के विकास के साथ साथ गौरव भी बढ़ाया है। मुख्यमंत्री श्री साय के नेतृत्व में छत्तीसगढ़ राज्य के विकास को गति मिली है और समाज के हर वर्ग का कल्याण हो रहा है।

कोंडागांव विधायक सुश्री लता उसेंडी ने कहा कि सुशासन तिहार के माध्यम से गांवों में शासकीय योजनाओं का लाभ पहुंचाया जा रहा है। डबल इंजन की सरकार के गत 15 माह में विकास की गति और शासकीय कार्यों में पारदर्शिता आई है। पूर्व विधायक सेवकराम नेताम ने कहा कि सुशासन तिहार से ग्रामीणों की समस्याओं और मांगों का समयबद्ध निराकरण सुनिश्चित किया जा रहा है। शिविर में प्रभारी मंत्री, विधायक एवं अन्य अतिथियों ने विभिन्न योजनाओं के तहत ग्रामीणों को हितग्राहीमूलक सामग्री वितरित किए। शिविर में उद्यानिकी विभाग द्वारा 19 हितग्राहियों को सब्जी बीज और जैविक खाद, मत्स्य पालन विभाग द्वारा 02 हितग्राहियों को मछली जाल, खाद्य विभाग द्वारा 55 हितग्राहियों को राशन कार्ड, 05 हितग्राहियों को आवास स्वीकृति पत्र, 44 हितग्राहियों को मनरेगा जॉब कार्ड, समाज कल्याण विभाग द्वारा 01 दिव्यांगजन को व्हीलचेयर, श्रम विभाग द्वारा 24 को श्रम पंजीयन सहित कई अन्य योजनाओं का लाभ ग्रामीणों को मिला। इस अवसर पर कलेक्टर श्रीमती नूपुर राशि पन्ना जिला पंचायत सदस्य श्रीमती रदमा बघेल व श्रीमती भगवती नेताम, जनपद पंचायत अध्यक्ष श्रीमती जुगबती पोयाम सहित स्थानीय जनप्रतिनिधि जिला पंचायत सीईओ अविनाश भोई, एडीएम चित्रकांत चार्ली ठाकुर सहित अन्य अधिकारीगण उपस्थित थे।

संक्षिप्त समाचार

रिंग रोड पर ट्रक ने स्कूटर सवार युवती को रौंदा, मौके पर ही मौत

रायपुर (समय दर्शन)। रायपुर के तेलीबांधा रिंग रोड पर शुक्रवार सुबह एक दर्दनाक सड़क हादसे में 27 वर्षीय युवती तान्या रेड्डी की मौके पर ही मौत हो गई। हादसे के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई और राष्ट्रीय मार्ग पर जाम लग गया। पुलिस ने मौके पर पहुंचकर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भिजवाया और फरार ट्रक चालक को कुछ ही देर में गिरफ्तार कर लिया।

पीछे से आ रहे ट्रक ने मारी टक्कर- जानकारी के मुताबिक, तान्या रेड्डी स्कूटर से तेलीबांधा की ओर जा रही थीं, तभी पीछे से तेज रफ्तार ट्रक ने उन्हें रौंद दिया। हादसा इतना भीषण था कि युवती की मौके पर ही मौत हो गई।

हादसे के बाद लगा लंबा जाम- घटना के बाद रिंग रोड पर वाहनों की लंबी कतारें लग गईं। मौके पर मौजूद लोगों ने तुरंत पुलिस को सूचना दी। तेजी से कार्रवाई करते हुए पुलिस ने जाम हटवाने का काम शुरू किया और हालात को सामान्य किया।

पुलिस ने की त्वरित कार्रवाई- तेलीबांधा थाना पुलिस ने मर्ग कायम कर शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। साथ ही घटना के कुछ ही देर बाद फरार ट्रक चालक को गिरफ्तार कर लिया गया। पुलिस अब हादसे के कारणों और ट्रक चालक की लापरवाही की जांच कर रही है। रायपुर में हुआ यह हादसा तेज रफ्तार और लापरवाह वाहन चालकों की गंभीर समस्या को उजागर करता है। युवती की असमय मौत ने एक बार फिर शहरवासियों को सड़क सुरक्षा की अनदेखी पर सोचने को मजबूर कर दिया है। पुलिस ने त्वरित कार्रवाई जरूर की है, लेकिन ऐसे हादसों की रोकथाम के लिए सतर्कता और सख्ती दोनों जरूरी हैं।

शासन की जनकल्याणकारी योजनाओं से बदल रहा है जनजीवन

प्रधानमंत्री आवास योजना से शंकर का सपना हुआ साकार

रायपुर (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ शासन द्वारा संचालित विभिन्न जनकल्याणकारी योजनाएं आमजन के जीवन में सकारात्मक बदलाव ला रही हैं। कांकेर जिले के पखांजूर विकासखण्ड के ग्राम पीवी 93 सिरपुर निवासी शंकर बरकंदाज ने समाधान शिविर के मंच से अपने अनुभव साझा करते हुए प्रधानमंत्री आवास योजना के माध्यम से हुए परिवर्तन की जानकारी दी। अतिसंवेदनशील ग्राम छोटेबेठिया में आयोजित जिला स्तरीय समाधान शिविर में शंकर बरकंदाज ने बताया कि वे अत्यंत गरीब परिवार से हैं तथा पहले कच्चे मकान में रहने को विवश थे। पारिवारिक आर्थिक स्थिति दुर्बल होने के कारण पक्के मकान का निर्माण कर पाना उनके लिए असंभव था। प्रधानमंत्री आवास योजना अंतर्गत उनका प्रकरण स्वीकृत हुआ, जिसके फलस्वरूप आज उनका अपना पक्का मकान पूर्ण रूप से तैयार हो चुका है। बरकंदाज ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी एवं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने उन्हें और उनके परिवार को एक सुरक्षित आश्रय प्रदान किया है। उन्होंने भावुक होकर बताया कि पहले उनका जीवन कच्चे मकान की सीलन, असुरक्षा और कष्टों से भरा हुआ था, किन्तु अब इस योजना के अंतर्गत मिले आवास के कारण वे अपने परिवार के सभी सदस्यों के साथ सुखपूर्वक जीवन यापन कर रहे हैं। उन्होंने प्रधानमंत्री एवं मुख्यमंत्री के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हुए कहा कि यह योजना उनके जैसे असंख्य जरूरतमंदों के जीवन में आशा की किरण बनकर आई है। समाधान शिविर में शंकर ने अन्य ग्रामीणों को भी योजना का लाभ लेने हेतु प्रेरित किया।

गजानंद एप से ऑनलाईन सट्टा का संचालन करने वाले मुख्य संचालक पिता-पुत्र गिरफ्तार

रायपुर (समय दर्शन)। गजानंद एप के माध्यम से ऑनलाईन सट्टा का संचालन करने वाले पिता-पुत्र नंदलाल लालवानी उर्फ नंदू तथा गोविंद लालवानी को पुलिस ने तिल्दा-नेवरा से गिरफ्तार किया है। तथा उनके कब्जे से 07 नग मोबाईल फोन, 60 हजार रूपये नगद तथा 600 से अधिक बैंक खातो में लेन-देन का हिसाब बरामद किया है। पुलिस ने लेन-देन से सबंधित सभी बैंक खातों को फ्रीज करवा दिया गया है। मामले में अभी तक 6 सटोरियों को गिरफ्तार किया जा चुका है। सटोरियों के विरूद्ध थाना तिल्दा नेवरा में धारा 4(क) जुआ एक्ट, छत्तीसगढ़ जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 07, 318(4), 338, 336(3), 340(2), 61(2) बीएनएस का अपराध पंजीबद्ध किया गया है। बता दें कि पुलिस महानिरीक्षक रायपुर रेंज रायपुर अमरेश मिश्रा तथा पुलिस उप महानिरीक्षक एवं वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक डॉ. लाल उमेद सिंह द्वारा रायपुर पुलिस के समस्त पुलिस राजपत्रित अधिकारियों एवं थाना प्रभारियों सहित प्रभारी एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट को जुआ एवं सट्टा पर पूर्णरूपेण अंकुश लगाने हेतु जुआ, सट्टा एवं ऑनलाईन सट्टा संचालित करने वालों की पतासाजी कर उन पर कार्यवाही करने हेतु निर्देशित किया गया है। जिसके तारतम्य में दिनांक 02.04.25 को एण्टी क्राईम एण्ड साईबर यूनिट तथा थाना तिल्दा नेवरा पुलिस की संयुक्त टीम द्वारा थाना तिल्दा नेवरा क्षेत्रांतर्गत वार्ड नं. 06 स्थित एक मकान में गजानंद एप से ऑन-लाईन सट्टा संचालित करते आरोपी हर्ष पंजवानी को गिरफ्तार कर उसके कब्जे से 04 नग मोबाईल फोन तथा नगदी रकम जुमला कीमती लगभग 60,000/- रूपये तथा विभिन्न कम्पनी के चेकबुक, पासबुक एवं ए.टी.एम. कार्ड एवं सट्टा के पैसों का हिसाब-किताब जप्त किया गया है। गिरफ्तार आरोपी हर्ष पंजवानी से गजानंद एप के माध्यम से ऑनलाईन सट्टा संचालित करने वाले अन्य आरोपी के संबंध में पूछताछ कर प्राप्त साक्ष्यों के आधार पर दिनांक 09.04.2025 को प्रकरण में आरोपी खूबीराम पटेल, सोनू ऊर्फ शिवा सेन, शैलेन्द्र सिंह ऊर्फ सोनू को गिरफ्तार कर कब्जे से 03 नग मोबाईल फोन जुमला कीमती लगभग 60,000/- रूपये जप्त किया जाकर सभी आरोपियों के विरूद्ध थाना तिल्दा नेवरा में अपराध क्रमांक 125/25 धारा 4(क) जुआ एक्ट एवं छ0ग0 जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 7, 318(4), 338, 336(3), 340(2), 61(2) बी.एन.एस का अपराध पंजीबद्ध किया गया है। प्रकरण के विवेचनाक्रम में पाया गया कि नंदलाल लालवानी द्वारा विभिन्न व्यक्तियों के आधार कार्ड को अपने पास रखकर उससे फर्जी मोबाईल नम्बर प्राप्त कर उसका उपयोग गजानंद एपके संचालन हेतु किया गया है साथ ही जप्त मोबाईल फोन के तकनीकी विशलेषण में गोविंद लालवानी की भी संलिप्तता पाई गई। जिस पर नंदलाल लालवानी एवं गोविंद लालवानी को पकड़कर घटना के संबंध में पूछताछ करने पर उसके द्वारा उक्त घटना को स्वीकार किया गया। दोनो सटोरियों को गिरफ्तार कर उनके कब्जे से 03 नग मोबाईल फोन एवं 02 नग आधार कार्ड जुमला कीमती लगभग 60,000/- रूपये जप्त कर सटोरियों के विरूद्ध थाना तिल्दा नेवरा में अपराध क्रमांक 125/25 धारा 4(क) जुआ एक्ट एवं छग जुआ प्रतिषेध अधिनियम 2022 की धारा 7, 318(4), 338, 336(3), 340(2), 61(2) बी.एन.एस के तहत कार्यवाही किया गया है।

संपादकीय

टोल-फ्री बरकरार

सुप्रीम कोर्ट ने अपने उस फैसले की समीक्षा से इनकार कर दिया, जिसमें दिल्ली-नोएडा-डायरेक्ट यानी डीएनडी फ्लाईओवर को दैनिक यात्रियों के लिए शुल्क मुक्त रखने का आदेश दिया गया था। पीठ ने दिसंबर 2024 को इलाहाबाद उच्च न्यायालय के डीएनडी फ्लाईओवर को टोल-फ्री करने के फैसले को भी बरकरार रखा। साथ ही नोएडा प्राधीकरण समेत उप्र व दिल्ली सरकारों की आलोचना करते हुए सत्ता के दुरुपयोग व जनता के विश्वास के उल्लंघन द्वारा इसकी अंतरआत्मा को ठेस पहुंचाने की बात भी की। नोएडा टोल ब्रिज कंपनी लिमिटेड की अपील को खारिज करते हुए उच्च न्यायालय ने कहा था, कंपनी ने परियोजना की लागत और पर्याप्त लाभ वसूल लिया है। जिससे उपयोगकर्ता शुल्क या टोल लगातार लगाने या वसूलने का कोई औचित्य नहीं रह गया है। यह देश का पहला आठ लेन चौड़ा व तकरीबन नौ किलोमीटर लंबा एक्सेस-कंट्रोल एक्सप्रेस-वे है, जो दिल्ली के महारानी बाग व निजामुद्दीन इलाकों को नोएडा से सीधा जोड़ता है, जिससे यात्रा में लगने वाले समय में काफी कटौती होती है। 2001 में जब इसका उद्घाटन हुआ था तो पहले वाहनचालकों को यह टोल काफी ज्यादा लगता था। मगर समय व ईधन की बचत के चलते यह नियमित यात्रियों के लिए बेहद सुविधाजनक बनता चला गया। प्राधिकरण व कंपनी की मिलीभगत के कारण लंबे अरसे तक टोल वसूली जारी रही। मामला जब अदालत में गया तो दोनों की तरफ से अलग-अलग दलीलें दी गई। मगर उस वक्त ही सबसे बड़ी अदालत ने प्राधिकरण द्वारा कंपनी से रियायत समझौतों के माध्यम से किए गए अनुबंध को अनुचित, अन्यायपूर्ण व संवैधानिक मानदंडों के अनुरूप नहीं बताया था। अधिकारों का अतिक्रमण करते हुए प्राधिकरण ने शुल्क के निर्धारण, संग्रह व विनियोजन का नियंत्रण दिया था, उसे अदालत ने कानूनन अवैध ठहराया था। प्राधिकरण की मिलीभगत के चलते इस तरह का नुकसान केवल आम नागरिक ही नहीं भुगतता बल्कि राजस्व में भी नुकसान होता है। यूं भी एनसीआर से रोजाना यात्रा करने वालों से की जाने वाली वसूली निंदनीय ही कही जाएगी। माल-बंटवारे या अन्य किसी लोभ के अदालत का कीमती वक्त जाया करने वालों से मुआवजे की वसूली भी की जानी जरूरी है। जो न सिर्फ अपनी गलती स्वीकारने को राजी हैं, बल्कि बिला-वजह पुनर्विचार की अपेक्षा भी कर रहे हैं।

ट्रंप का जवाब नहीं

हरिशंकर व्यास

कुछ भी हो अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का जवाब नहीं है। उन्होंने भारत और पाकिस्तान के झगड़े पर सीधी दो टूक बात कही कि उसने उसको ठोका, बदले में उसने भी ठोक दिया। एक-दूसरे को जवाब दे दिया है, इसलिए उम्मीद है अब रुक सकते हैं। हालांकि मैं दोनों देशों को जानता हूं। हमारे दोनों से बहुत अच्छे संबंध हैं, और मैं चाहता हूं कि यह सब बंद हो। यदि मैं कुछ मदद कर सकता हूं, तो ज़रूर करूंगा। पर तभी जब ज़रूरत हुई। इससे पहले भारत के ऑपरेशन की खबर पर ट्रंप का कहना था, दुर्भाग्यपूर्ण है, हमने अभी-अभी इसके बारे में सुना है,ज्मुझे लगता है कि लोगों को अंदाज़ा था कि कुछ होने वाला हैज.वे लंबे समय से लड़ते आ रहे हैं। जाहिर है दुनिया ने दोनों देशों का झगड़ा बहुत हल्के से लिया है। एक वक्त था जब भारत और पाकिस्तान की लड़ाई के खटके से महाशक्तियां खटक जाती थीं। अब कोई परवाह ही नहीं कर रहा है। अकेले इजराइल के नेतन्याहू ने आतंक के हवाले भारत की कार्रवाई का दो टूक समर्थन किया। बाकी सबने संयम की नसीहत दी है। पाकिस्तान के साथ चीन, तुर्की जैसे खड़े हुए है वैसा क्या कोई भारत के साथ खड़ा दिखा है? ऐसा क्यों? क्या डोनाल्ड ट्रंप को पाकिस्तान को धमका नहीं देना चाहिए था? ऐसे ही रूस को भारत के लिए क्या दौड़े आना नहीं था? उसे चीन पर दबाव बनाना था लेकिन वह खुद क्योंकि चीन पर अब निर्भर है तो रूस कर क्या सकता है। मध्यस्थता के लिए सब तैयार बैठे हैं मगर आतंकवाद के खिलाफ भारत की लड़ाई या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कसम में हौसला बढ़ाने वाली कोई महाशक्ति नहीं है, नेतन्याहू को छोड़ कर। जबकि सोचें, याद करें, आतंक के खिलाफ नेतन्याहू का कितने देशों ने हौसला बढ़ाया था। यह सब इसलिए है क्योंकि दुनिया और सभी नेता प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और उनकी सरकार की तासीर को अच्छे से जान चुके हैं। वैश्विक मीडिया, वैश्विक अंग्रेजी चैनलों की जरा अपनी चैनलों से तुलना करें तो कोई भी भारत और दक्षिण एशिया को तरजीह नहीं देता हैं। एक मनोवैज्ञानिक कारण यह भी है कि झूठों के झगड़े में भला क्या जानना और देखना। तभी ट्रंप और दुनिया के लिए इस झगड़े का इतना ही अर्थ है कि उसने उसको ठोका, बदले में उसने भी ठोक दिया। और शुक्रवार की सुबह अमेरिका के उप राष्ट्रपति वेंस ने भी ठोक दिया कि इन दो देशों के टकराव, लड़ाई से हमारा लेना-देना नहीं है। यह मूल रूप से हमारा विषय नहीं है, उन्होंने कहा 'हम उस युद्ध के बीच में नहीं कूदने वाले जो मूल रूप से हमारे अधिकार क्षेत्र में नहीं आता और जिस पर अमेरिका का कोई नियंत्रण नहीं है। आप जानते हैं, अमेरिका भारत को हथियार छोड़ने के लिए मजबूर नहीं कर सकता। न ही हम पाकिस्तान को ऐसा करने के लिए कह सकते हैं।ज्हमारी आशा और अपेक्षा है कि यह संघर्ष किसी बड़े क्षेत्रीय युद्ध या—ईश्वर न करे—किसी परमाणु संघर्ष में तब्दील नहीं होगा। फिलहाल हमें नहीं लगता कि ऐसा होने जा रहा है'। यों यह बात ट्रंप प्रशासन की अमेरिका फर्स्ट विदेश नीति की भी झलक है। मगर यदि अमेरिका ने पंचायत नहीं की तो दक्षिण एशिया का चौधरी तब फिर चीन ही होगा। वैसे मेरा मानना है वेंस का यह दो टूक रूख धंधे के मकसद से भी हो सकता है। वह भारत से फटाफट व्यापार संधि कर अपनी कृषि पैदावार के लिए भारत का बाजार चाहता है। भारत वह करें तो फिर वह शायद भारत के लिए आगे बढ़े!

सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न समस्त मत पंथ विश्व में शांति चाहते हैं

प्रह्लाद सबनानी

भारत में सनातन हिंदू धर्म तो अनादि एवं अनंत काल से चला आ रहा है परंतु बाद के खंडकाल में भारत में कई अन्य प्रकार के मत पंथ भी विकसित हुए हैं जैसे बौद्ध धर्म, जैन धर्म, सिख धर्म आदि। भारत में विकसित विभिन्न मत पंथ मूलत: सनातन हिंदू संस्कृति का ही अनुपालन करते हुए दिखाई देते हैं और ऐसा कहा जाता है कि यह समस्त मत पंथ सनातन हिंदू धर्म की विभिन्न धाराएं ही हैं। भारत में विकसित मत पंथ सामान्यत: अपने दर्शन, कर्मकांड एवं सामाजिक ताने बाने के दायरे में अपने धर्म का अनुपालन करते हैं। भारत में हिंदू धर्म के सिद्धांतों पर चलने वाले नागरिकों की संख्या सबसे अधिक हैं एवं यह भारत का सबसे बड़ा धर्म है, जिसमें विभिन्न देवी देवताओं और पूजा प्रथाओं की एक विस्तृत प्रणाली शामिल है। भारत में विकसित हुए मत पंथों में बौद्ध धर्म की उत्पत्ति भगवान बुद्ध की शिक्षाओं के आधार पर हुई है। यह शिक्षाएं मानव जीवन से दु:ख और उसके कारणों को दूर करने के सम्बंध में हैं। बौद्ध धर्म में ध्यान, प्रेम एवं करुणा पर जोर दिया जाता है। बौद्ध धर्म में कर्मकांड के महत्व को भी रेखांकित किया गया है परंतु इसका उद्देश्य ईश्वर की आराधना नहीं बल्कि मोक्ष की प्राप्ति करने से है। भारत में ही विकसित दूसरे महत्वपूर्ण मत पंथ, जैन धर्म में अहिंसा, आत्म संयम, सत्य एवं ईमानदारी पर अधिक जोर दिया जाता है। जैन धर्म में ऐसा माना जाता है कि मोक्ष की प्राप्ति स्वयं के प्रयासों से ही सम्भव है।

भारत में ही विकसित तीसरा महत्वपूर्ण मत पंथ है सिख धर्म जिसकी स्थापना श्री गुरु नानक देव जी ने की थी। सिख धर्म ईश्वर में विश्वास, सेवा, समानता एवं सत्यनिष्ठा पर आधारित है। सिख धर्म में ईश्वर की उपासना की जाती है परंतु यह उपासना कर्मकांड से परे हैं।

भारत की सनातन हिंदू संस्कृति को पूरे विश्व में अति प्राचीन संस्कृति के रूप में देखा जाता है। मूल रूप से भारतीय सनातन हिंदू संस्कृति में आध्यात्म का विशेष महत्व है जिसके अंतर्गत वसुधैव कुटुंबकम, सर्वजन हिताय सर्वजन सुखाय, विश्व का कल्याण हो, किसी भी जीव का अहित न हो जैसे भावों पर अमल करने का प्रयास किया जाता है। भारत में चूंकि मनुष्य के साथ साथ जीव जंतुओं, नदियों, पहाड़ों, पेड़ पौधों एवं जंगलों, आदि में भी ईश्वर का वास माना जाता है इसलिए किसी भी जीव को कोई क्षति न हो इस भावना को न केवल को आगे बढ़ाया जाता है बल्कि इस सिद्धांत पर अमल भी किया जाता है। इसीलिए भारत मूलत: शांतिप्रिय देश माना जाता है तथा भारत में हिंसा के लिए तो कोई जगह ही नहीं है। भारत के धर्मग्रंथों में भी जाने अनजाने में भी की गई जीव हत्या को पाप की संज्ञा दी गई है। सनातन हिंदू संस्कृति के ग्रंथों, उपनिषदों, आदि द्वारा काम, कर्म एवं अर्थ को धर्म के साथ जोड़कर ही सम्पन्न करने के उपदेश दिए जाते हैं। उदाहरण के लिए, महाभारत में वेद व्यास जी ने धर्म के आठ तरीके बताए हैं - (i) यज्ञ - जिसका आश्य है कि ऐसा कर्म जो समाज के लाभ के लिए किया जाता है। (ii) दान - समाज की सहायता करना। (iii) तप - अर्थात स्वयं में सुधार करते रहना, स्वयं का मूल्यांकन करना तथा नकारात्मक गुणों को दूर कर सकारात्मक गुणों का विस्तार करना। (iv) सत्यम् - सत्य के मार्ग पर चलना। (1) क्षमा - दूसरों तथा स्वयं को गलतियों के लिए क्षमा करना। (vi) दंभ - इंद्रियों को वश में रखना। (vii) आलोभ - लालच नहीं करना एवं लालच में न आना। (viii) अध्ययन - स्वयं और दुनिया का अध्ययन करना। सनातन हिंदू धर्म एवं भारत में उत्पन्न मत पंथों के अनुयायी सामान्यत: धर्म के उक्त वर्णित आठ तरीकों पर चलने का प्रयास करते पाए जाते हैं। धर्म की इस राह पर चलकर उन्हें समाज में शांति पूर्वक रहने की प्रेरणा मिलती है एवं अंतत: उन्हें मोक्ष की प्राप्ति होती है।

इसके साथ ही, विश्व के अन्य देशों में विकसित मत पंथों का अनुसरण करने वाले नागरिक भी भारत में पर्याप्त मात्रा में निवास करते हैं जैसे यहूदी, ईसाई एवं इस्लाम के अनुयायी, आदि। विश्व के अन्य भागों में विकसित उक्त वर्णित मत पंथों को सेमेटिक रिलिजन की श्रेणी में रखा जाता है क्योंकि इनकी साझा उत्पत्ति एवं कुछ सामान्य अवधारणाएं होती हैं, जैसे एक ही ईश्वर में विश्वास, नैतिकता एवं कर्मकांड। यहूदी धर्म एक धर्मग्रंथ (ताल्मुद) पर आधारित है। इस धर्मग्रंथ में यहूदी लोगों की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को दर्शाया गया है। यहूदी धर्म सेमेटिक धर्म की श्रेणी में आता है क्योंकि इसमें एक ईश्वर (येहव) में विश्वास, अनुष्ठान एवं नैतिक नियमों का पालन किया जाता है। ईसाई धर्म ईसा मसीह की शिक्षाओं पर आधारित है, जो एक ईश्वर में विश्वास एवं ईसा मसीह के द्वारा उद्धार करने एवं उनके द्वारा ही मोक्ष करने पर जोर देता है। इसी प्रकार इस्लाम भी पैगंबर मुहम्मद साहब की शिक्षाओं पर आधारित है, जो कि एक ईश्वर (अल्लाह) में विश्वास एवं कुरान का पालन करने पर जोर देता है।

भारत में उत्पन्न विभिन्न धर्मों एवं मत पंथों में ईश्वर की अवधारणा विविध है, परंतु सेमेटिक धर्मों में केवल एक ईश्वर में ही विश्वास किया जाता है। भारतीय मत पंथों में कर्मकांड का महत्व कम है, जबकि सेमेटिक धर्मों में कर्मकांड की महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। भारतीय मत पंथों में मोक्ष की प्राप्ति के विभिन्न मार्ग उपलब्ध हैं जिन पर चलकर मोक्ष की प्राप्ति की जा सकती है परंतु सेमेटिक धर्मों में मोक्ष की प्राप्ति केवल ईश्वर की कृपा से ही सम्भव है। भारतीय मत पंथों में विविध सामाजिक संरचना रहती है जबकि सेमेटिक धर्मों में एक समान सामाजिक संरचना रहती है एवं इसमें विविधता का अभाव है। भारत में उत्पन्न धर्मों एवं मत पंथों में तथा सेमेटिक धर्मों में सामाजिक संरचना एवं दर्शन भी अलग अलग है।

भारत के बारे में यह कहा जाता है कि यहां विविधता में भी एकता दिखाई देती है क्योंकि आज भारत में विभिन्न धार्मिक आस्थाओं एवं विभिन्न धर्मों की उपस्थिति तथा उनकी उत्पत्ति तो दिखाई ही देती है, साथ ही, व्यापारियों, यात्रियों, आप्रवासियों, एवं यहां तक कि आक्रमणकारियों द्वारा भी यहां लाए गए धर्मों को आत्मसात करते हुए उनका सामाजिक एकीकरण दिखाई देता है। सभी धर्मों के प्रति हिन्दू धर्म के आतिथ्य भाव के विषय में जॉन हार्डन लिखते हैं, हालांकि, वर्तमान हिन्दू धर्म की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसके द्वारा एक ऐसे गैर-हिन्दू राज्य की स्थापना करना है जहां सभी धर्म समान हैं....। पूरे विश्व में संभवत: केवल भारत ही एक ऐसा देश है जहां धार्मिक विविधता एवं धार्मिक सहिष्णुता को समाज द्वारा मान्यता प्रदान की जाती है। सनातन हिंदू संस्कृति में धर्म को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। भारतीय नागरिक स्वयं को किसी न किसी धर्म से सम्बंधित अवश्य बताता है। इसी के चलते, भारतीय नागरिक विश्व के किसी भी कोने में चला जाय परंतु अपनी संस्कृति को छोड़ता नहीं है। इसी कारण से यह कहा जा रहा है कि वैश्विक स्तर पर आज की परिस्थितियों की बीच केवल भारतीय सनातन संस्कृति के माध्यम से ही पूरे विश्व में एक बार पुन: शांति स्थापित की जा सकती है।

पाक से इंडिया को सावधान रहने की आवश्यकता

अजीत द्विवेदी

जम्मू कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले का भारत ने बदला ले लिया। पाकिस्तान की सरजमीं पर स्थित आतंकवादी संगठनों पर भारत ने एयर स्ट्राइक किया और आतंकवाद के ढांचे को बड़ा नुकसान पहुंचाया है। इससे पहले भारत ने पहलगाम हमले के बाद पूरा संयम दिखाया और पाकिस्तान को मौका दिया कि वह आतंकवादियों के खिलाफ कार्रवाई करे। अमेरिका ने भी पाकिस्तान को सुझाव दिया था कि वह भारत के साथ मिल कर आतंकवादी संगठनों के खिलाफ कार्रवाई करे और पहलगाम के दोषियों को सजा दिलाने में मदद करे। लेकिन जब पाकिस्तान ने कुछ नहीं किया और उलटे उसके मंत्रियों ने स्वीकार किया कि पाकिस्तान तीन दशक से आतंकवाद को पाल पोस रहा है तो भारत ने एयर स्ट्राइक करके आतंकवाद के ढांचे को नष्ट किया। लेकिन भारत की इस सैन्य कार्रवाई को पाकिस्तान 'एक्ट ऑफ वॉर' यानी युद्ध की कार्रवाई बता रहा है और उसके नेता बदला लेने का हुंकारा मार रहे हैं।

भारत की कार्रवाई के बाद पाकिस्तान सीमा पर खास कर कुपवाड़ा और राजौरी-पुंछ सेक्टर में लगातार गोलीबारी कर रहा है। युद्धविराम का उल्लंघन करके हो रही फायरिंग में कम से कम 15 बेकसूर नागरिकों के मारे जाने की खबर है, जिनमें चार मासूम बच्चे भी हैं। भारत सरकार सीमावर्ती जिलों को खाली करा रही है और नागरिकों को बंकर में सुरक्षित किया जा रहा है। लेकिन यह तात्कालिक समस्या है। भारत अपने उपाय करके नागरिकों को सुरक्षित कर लेगा और भारतीय सेना पाकिस्तान का मुंहतोड़ जवाब भी देगी। लेकिन असली समस्या पाकिस्तान की नीयत और उसे मिलने वाले अंतरराष्ट्रीय समर्थन को लेकर है। पाकिस्तान के फौजी कमांडर बहुत आक्रामक हैं। कुछ दिन पहले ही सेना प्रमुख जनरल आसिम मुनीर ने हिंदू और मुस्लिम को लिए दो राष्ट्र के सिद्धांत की बात कही थी। प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ भी आक्रामक तेवर दिखा रहे हैं क्योंकि उनकी सरकार पर खतरा मंडरा रहा है। भारत की कार्रवाई के बाद उन्होंने बैठक बुलाई तो कई वरिष्ठ मंत्री उसमें नहीं पहुंचे। दूसरी ओर पाकिस्तान के लोग सड़कों पर उतरे हैं और भारत विरोधी नारे लगा रहे हैं। अपनी राजनीतिक सत्ता सुरक्षित रखने और पाकिस्तानी आवाम का गुस्सा ठंडा करने के लिए पाकिस्तान कोई बड़ा कदम उठा सकता है। इसमें संदेह नहीं है कि भारत के खिलाफ उठाया गया उसका कोई भी कदम उसके लिए आत्मघाती हो सकता है। फिर भी पाकिस्तान के हुक्मरान, फौजी कमांडर और आईएसआई को इसकी चिंता नहीं रहती है। भारत के सावधान रहने की जरुरत इसलिए भी है क्योंकि चीन और तुर्की ने खुल कर पाकिस्तान का समर्थन किया है। इसके बरक्स भारत को सिर्फ इजराइल का खुला समर्थन मिला है। उसके अलावा किसी देश ने भारत के कदम की आलोचना नहीं की है तो उसे जायज भी नहीं ठहराया है। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने तो अपनी पहली प्रतिक्रिया में भारत की सैन्य कार्रवाई को 'शर्मनाक' कहा। सोचें, इसमें क्या शर्मनाक है? भारत में घुस कर पाकिस्तान के आतंकवादियों ने 26 बेकसूर लोगों की हत्या की थी और जवाबी कार्रवाई में भारत ने आतंकवादियों के ठिकाने नष्ट किए। इसमें कुछ भी शर्मनाक नहीं है। लेकिन ट्रंप को यह 'शर्मनाक' लगता है, जिनका देश अमेरिका अपनी सरजमीं छोड़ कर सारी दुनिया में जंग लड़ रहा है! इतना ही नहीं ट्रंप ने एक ही सांस में भारत और पाकिस्तान दोनों को अपना दोस्त और साझेदार मुल्क बताया। भारत और प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जिन्हें अपना दोस्त मानते हैं वे भी मदद करने की बजाय उपदेश देने की मुद्रा में हैं और सलाह दे रहे हैं कि जितनी जल्दी हो उतनी जल्दी तनाव खत्म करें।

यह ग्लेशियर की मौत की शोकसभा नहीं अपितु भावी संकट का है संकेत

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद शर्मा

अभी दो चार दिन पहले ही भारत, भूटान, नेपाल और चीन के चुनिंदा ग्लेशियलोजिस्टों ने समुद्र तल से करीब 5100 मीटर उंचे याला ग्लेशियर के मौत की अनोखी शोकसभा का आयोजन कर दुनिया के देषो को ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभाव के प्रति सावचेत करने का प्रयास किया है। हांलाकि किसी ग्लेशियर की मौत की विधिवत घोषणा और मातम सभा के आयोजन का यह कोई पहला मौका नहीं है। पिछले सात सालों में यह तीसरा मौका है जब ग्लेशियर की मौत की शोक सभा का आयोजन और उस स्थल पर पट्टिका लगाने का काम हुआ है। इससे पहले 2019 में आइसलैण्ड के ओक और 2021 में मैक्सिको के ओयोलोको ग्लेषियर के मौत की शोकसभा का आयोजन किया जा चुका है। ग्लोबल वार्मिंग दुनिया को किस दिशा में ले जा रही है और किस तरह के प्रभाव हमें पिछले सालों से लगातार देखने को मिल रहे हैं उनमें से ग्लेशियरों के नष्ट होना तो केवल और केवल एक पक्ष मात्र है। जबकि ग्लोबल वार्मिंग के चलते ग्लेशियरों के पिघलने के बारे में विशेषज्ञ वैज्ञानिक लगातार सावचेत करते रहे हैं।

जब कोई ग्लेशियर इस हालात में आ जाता है कि उसका मूवमेंट ही लगभग समाप्त हो जाता है तो वह ग्लेशियर मृत श्रेणी में आ जाता है। दुनियाभर में ग्लेशियरों के पिघलने की गति तेज बढ़ती जा रहे हैं। ग्लेशियरों के पिघलने के कारण समुद्र का जल स्तर बढ़ता जा रहा है। समुद्र के जल स्तर के बढ़ने के कारण समुद्र किनारे के कई शहरों के सामने डूबने का संकट दिखाई दे रहा है। यह तो केवल एक पहलू है। ग्लोबल वार्मिंग और ग्लेशियरों के पिघलने के कारण सूखा, अतिवृष्टि, अनावृष्टि, तापमान में अत्यधिकता जैसे साल दर साल गर्मी में तेजी और असमय तेज गर्मी, तेज वर्षात और तेज सर्दी प्रभावित कर रही है। जंगलों में आग के कारण जिस तरह से जंगल और जंगल की जीव विविधता प्रभावित हो रही है और जंगल रेगिस्तान में तब्दील हो रहे हैं यह अपने आपमें गंभीर है। इसी तरह से मौसम में अनावश्यक बदलावों के कारण नई नई बीमारियों के साथ ही विलुप्त बीमारियां जैसे मलेरिया और वायरस जनित बीमारियों का बढ़ता प्रकोप, दवाओं की असरता कम होना और ना जाने इस तरह के क्या क्या परिणाम भुगतने पड़ रहे हैं यह आज सारी दुनिया के सामने हैं। ग्लोबल वार्मिंग के चलते सूखा और रेगिस्तान का विस्तार लगातार होता जा रहा है। पिछले सालों में दुनिया के देशों में चक्रवातों का चक्र तेजी से बदला है और तूफानों की तीव्रता और फ्रिक्वेंसी में तेजी आई है। इसके साथ ही भूकंपों की सक्रियता बढ़ रही है। अब तूफान और भूकंपों की फ्रिक्वेंसी तो इस कदर बढ़ गई है कि कब भूकंप आ जाये और कब समुद्र तट की और बढ़ते तूफान की घोषणा हो जाए यह आये दिन देखने को मिल रहा हे। दुनियाभर के देश ग्लोबल वार्मिंग के दुष्प्रभावों से प्रभावित है। जिस तरह के बडे बड़े सम्मेलनों में दुनिया के नेता ग्लोबलवार्मिंग को लेकर चिंतन मनन को जुट तो जाते हैं पर परिणाम अभी तक जो सामने दिखाई दे रहे हैं पह गंभीर संकट की और साफ इशारा समझने की आवश्यकता है।

दरअसल जिस तरह का ग्लोबल वार्मिंग का असर देखा जा रहा है उससे यह माना जा रहा है कि लाख प्रयासों के बावजूद 9 लाख ट्रिलियन टन बर्फ के पिघलने की संभावना वैज्ञानिकों द्वारा बार बार की जा रही है। मौसम में हर दूसरे तीसरे दिन बदलाव और चरम मौसम के हालात गंभीर है। रेगिस्तान का विस्तार हो रहा है तो सूखे की संभावनाएं अधिक हो गई है। बीमारियों के नित नए वेरियंट सामने आ रहे हैं तो कीटाणुओं की सक्रियता और उनका असर साफ देखा जा सकता है। ऐसे में एक और दुनिया के देशों को ढुलमिल नीति त्यागकर ठोस प्रयास करने होंगे। गैरसरकारी संगठनों को भी आगे आना होगा। इसके साथ ही वैज्ञानिकों को भी एक बात ध्यान रखनी चाहिए कि केवल आय बढ़ाने के लिए इस तरह के प्रयास नहीं करने चाहिए। गैरसरकारी संगठनों की ऐसें हालातों में और अधिक्र सक्रियता के साथ अभियान चलाने होंगे। ग्लेशियरों के पिघलने का संकट आने वाले समय में और अधिक गंभीर होगा क्योंकि जिस तरह से कांक्रिट के जंगल, अत्यधिक भू जल का दोहन पंखे कूलर के स्थान पर एयर कण्डीशरों का बढता प्रयोग, और इलेक्ट्रोनिक उत्पादों के कारण हालत दिन प्रतिदिन खराब होते जा रहे हैं। हालात यही रहे तो ग्लेशियरों की बर्फ पिघलेगी ही पिघलेगी साथ ही अनेक समस्याएं और अधिक नकारात्मक प्रभाव डालेगी।

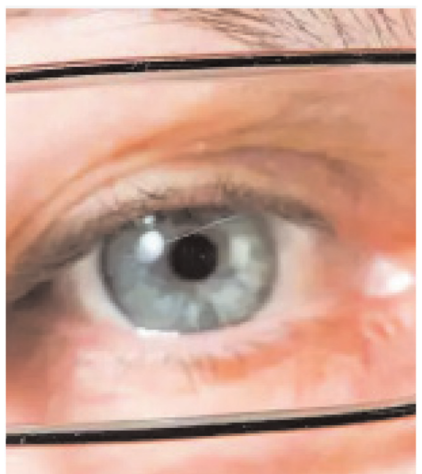

आंखों में नजर आने वाले डॉट्स हो सकते हैं आई फ्लोटर्स के संकेत

आई फ्लोटर्स आंखों की एक समस्या है, जो कई लोगों को प्रभावित कर सकती है। यह समस्या तब होती है, जब आंखों के अंदर के चिपचिपे पदार्थ के संतुलन में दिक्कत होने लगती है। आइए जानते हैं इसके कारणों और बचाव के लिए क्या खाएं इसके बारे में।

कई बार आंखों में डॉट्स नजर आते हैं, लेकिन लोग ऐसा क्यों हो रहा है, इसके कारणों को समझ नहीं पाते हैं। ऐसा आई फ्लोटर्स के कारण हो सकता है। आंखों में जब विट्रोस ह्यूमर जमा होने लगे, तो ऐसी स्थिति को आई फ्लोटर्स कहते हैं। विट्रोस ह्यूमर एक तरह का चिपचिपा पदार्थ होता है, जो आंख के पिछले हिस्से में भर जाता है और आंखों के लगभग दो-तिहाई भाग में फैल जाता है। जिन लोगों को यह समस्या होती है उन्हें आंखों में धब्बे या डॉट्स नजर आने लगते हैं। आई मूवमेंट के दौरान इन डॉट्स को देखा जा सकता है।

आई फ्लोटर्स के लक्षण

आई फ्लोटर्स के लक्षण अलग-अलग हो सकते हैं। इसके लक्षणों में आंखों के सामने डॉट या धब्बा नजर आना शामिल है। यह समस्या एक या दोनों आंखों में हो सकती है। इसके अलावा लाइट या आसमान की ओर देखने पर आंखों में धागे जैसी संरचना भी नजर आ सकती है।

आई फ्लोटर्स के कारण

- आंख से चिपचिपा पदार्थ आना
- आंख में लगी कोई चोट
- आंखों से ब्लीडिंग होना
- आई इंफेक्शन होना
- आंखों में सूजन होना

बचाव के लिए इन फूड्स का करें सेवन

मछली - मछलियों में ओमेगा-3 फैटी एसिड होता है, जो आंखों की सेहत के लिए बेहद फायदेमंद है। इसके लिए आप टूना, सैल्मन आदि मछलियों का सेवन कर सकते हैं।

गाजर - आंखों के लिए गाजर अच्छा होता है। इसमें विटामिन ए और बीटा कैरोटीन दोनों ही भरपूर मात्रा में होते हैं। ये पोषक तत्व आंखों को कई बीमारियों से बचाता है

नट्स - आंखों की अच्छी सेहत के लिए नट्स और फलियां को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं। इनमें ओमेगा-3 फैटी एसिड की मात्रा मौजूद होती हैं और नट्स में विटामिन-ई भी हाई होता है।

खट्टे फल - खट्टे फल जैसे संतरा, नींबू और आंवला भी विटामिन सी से भरपूर होता है, जोकि आंखों के स्वास्थ्य के लिए अच्छा है।

कुछ ऐसे हर्ब्स और सब्जियां होती हैं, जिनमें अद्भुत शक्तियां होती हैं। इनका पानी पीने से आपकी इम्यूनिटी स्ट्रॉन्ग हो सकती है। ये हर्ब्स और सब्जियां भिंडी, अदरक, दालचीनी, पीपली और पुदीना हैं, जो आपके मेटाबॉलिज्म को बेहतर बनाने में मदद करती हैं।

इन 5 तरह के पानी से हर मौसम में बीमारियां रहेंगी दूर, आप भी बनाकर करें ट्राई

हेल्दी मेटाबॉलिज्म और बढ़िया इम्यूनिटी पाने के लिए हम अपने आहार में कई तरह के सप्लीमेंट्स को शामिल करते हैं। जरूरी नहीं कि ये सप्लीमेंट्स हर व्यक्ति को सूट करें। इसकी बजाय आप नेचुरल रेमेडी का सहारा ले सकते हैं। कुछ ऐसे हर्ब्स और सब्जियां होती हैं, जिनमें अद्भुत शक्तियां होती हैं। इनका पानी पीने से आपकी इम्यूनिटी स्ट्रॉन्ग हो सकती है। ये हर्ब्स और सब्जियां भिंडी, अदरक, दालचीनी, पीपली और पुदीना हैं, जो आपके मेटाबॉलिज्म को बेहतर बनाने में मदद करती हैं। इस आर्टिकल में आइए इन इंग्रीडिएंट्स के बेनिफिट्स जानें और इन्हें कैसे आहार में शामिल करना है, जानें।

भिंडी

भिंडी पोषक तत्वों से भरपूर सब्जी है जो विटामिन, खनिज और डाइट्री फाइबर का अच्छा स्रोत है। विटामिन-ए, सी और के से भरपूर, भिंडी इम्यूनिटी फंक्शन और त्वचा के स्वास्थ्य का समर्थन करती है। इसका घुलनशील फाइबर ब्लड शुगर के स्तर को नियंत्रित करने और पाचन स्वास्थ्य को बढ़ावा देने में मदद करता है। जब मेटाबॉलिज्म की बात आती है, तो भिंडी ब्लड शुगर के स्तर को स्थिर करने और इंसुलिन संवेदनशीलता को बढ़ाने में सहायता करती है। यह इंसुलिन स्पाइक्स और क्रैश को रोक सकता है, जो संतुलित मेटाबॉलिज्म को बनाए रखने के लिए महत्वपूर्ण है।

पिपली

इसे लॉन्ग पेपर के नाम से भी जाना जाता है और इसके कई स्वास्थ्य लाभ हैं। पिपली में पिपेरिन होता है, जो पोषक तत्वों की जैव उपलब्धता को बढ़ाने और मेटाबॉलिक रेट को बढ़ाने की क्षमता के लिए जाना जाता है। पिपेरिन पाचन में सहायता करने और पोषक तत्वों के अवशोषण में सुधार करने के लिए अच्छा है। यह थर्मोजेनेसिस को भी उत्तेजित कर सकता है, जिससे कैलोरी बर्न करने में वृद्धि होती है और मेटाबॉलिक फंक्शन में सुधार होता है।

अदरक

अदरक को सदियों से इसके औषधीय गुणों के लिए जाना जाता है। इसमें जिंजरोल और शोगोल जैसे बायोएक्टिव यौगिक होते हैं जिनमें सूजन-रोधी और एंटीऑक्सीडेंट प्रभाव होते हैं। अदरक पाचन एंजाइम्स के उत्पादन को उत्तेजित करके पाचन में सहायता करता है। इसके अतिरिक्त, अदरक में थर्मोजेनिक गुण होते हैं, जिसका अर्थ है कि यह शरीर के तापमान को बढ़ा सकता है और कैलोरी बर्निंग को बढ़ावा देता है। यह वॉर्मिंग प्रभाव मेटाबॉलिक रेट को बढ़ा सकता है और वजन प्रबंधन में हेल्प कर सकता है।

दालचीनी

दालचीनी सिर्फ एक मसाला नहीं है, यह स्वास्थ्य लाभों का एक पावरहाउस है। इसमें एंटीऑक्सिडेंट और ऐसे यौगिक होते हैं जो इंसुलिन संवेदनशीलता में सुधार करते हैं, सूजन को कम करते हैं और ब्लड शुगर के स्तर को स्थिर करते हैं। दालचीनी ग्लूकोज के स्तर को नियंत्रित करने में मदद करती है, जो ब्लड शुगर में गिरावट के कारण होने वाले अधिक खाने को रोक सकती है।

पुदीना

पुदीना न केवल ताजगी देता है बल्कि कई स्वास्थ्य लाभ भी प्रदान करता है। इसमें मेन्थॉल जैसे यौगिक होते हैं जो पाचन तंत्र को सुधारने में मदद कर सकते हैं, सूजन को कम कर सकते हैं और अपच से राहत दिला सकते हैं। इसके अलावा, पुदीने का औषधीय पानी स्वाद को बढ़ाता है, पेट को गर्मी से राहत पहुंचाता है और पाचन को दुरुस्त रखता है।

ये सामग्रियां कैसे करती हैं काम

ब्लड शुगर रेगुलेशन

भिंडी, दालचीनी और अदरक ब्लड शुगर के स्तर को स्थिर करने के लिए प्रभावी तरीके से काम करते हैं। यह इंसुलिन स्पाइक्स को रोकने में मदद कर सकते हैं और साथ ही बैलेंस्ड मेटाबलॉलिज्म को सपोर्ट करते हैं।

पाचन स्वास्थ्य

अदरक, पुदीना और पिपली स्वस्थ पाचन और पोषक तत्वों के अवशोषण को बढ़ावा देते हैं। अगर आपका पाचन तंत्र अच्छा है, तो आपका मेटाबॉलिज्म भी अच्छा होगा, जो वेट मैनेज करने के लिए अच्छा हो सकता है।

थर्मोजेनेसिस

अदरक, दालचीनी और पिपली थर्मोजेनेसिस को बढ़ाते हैं। इसका मतलब है कि इन इंग्रीडिएंट्स से कैलोरी बर्निंग रेट में वृद्धि होती है। इससे मेटाबॉलिज्म रेट भी बढ़ता है।

कैसे पी सकते हैं ये मेडिसिनल पानी?

इन चीजों को आप कुकिंग में भी उपयोग कर सकते हैं। मगर सबसे अच्छा तरीका है कि आप इन मेडिसिनल वॉटर को डिटॉक्स ड्रिंक के रूप में पिएं। सुबह ये पानी पीने से न सिर्फ शरीर टॉक्सिन्स को बाहर निकालेगा, पर आप पूरे दिन के लिए तैयार होंगे।

क्या तनाव की वजह से बीपी लो भी हो सकता है?

तनाव सेहत के लिए अच्छा नहीं होता है। इसकी वजह से बीपी बढ़ जाता है और दिल पर भी असर होता है। इतना ही नहीं, स्ट्रेस के कारण, हमारी ओवरऑल हेल्थ भी खराब होती है। हम सभी यह बात जानते हैं कि तनाव लेने से ब्लड प्रेशर बढ़ जाता है। आपने अक्सर घर में बड़े-बुजुर्गों को भी यह बात कहते सुना होगा। लेकिन, क्या आप जानते हैं कि इसकी वजह से बीपी कम भी हो सकता है। जी हां, सेहतमंद रहने के लिए, तनाव से दूर रहना बहुत जरूरी है। इसके अलावा, बीपी लेवल का भी अधिक या कम होना सही नहीं है। क्या अधिक तनाव, लो बीपी का कारण भी बन सकता है, इस बारे में एक्सपर्ट से जानते हैं।

क्या स्ट्रेस की वजह से बीपी लो भी हो सकता है?

- स्ट्रेस को हमेशा हाई बीपी से जोड़कर देखा जाता है। लेकिन, इसकी वजह से कुछ लोगों को हाइपोटेंशन यानी लो बीपी की दिक्कत भी हो सकती है।
- अधिक तनाव की वजह से बीपी हाई होता है क्योंकि इसके कारण, स्ट्रेस हार्मोन रिलीज होते हैं। लेकिन, लंबे वक्त तक तनाव में रहना उल्टा असर भी दिखा सकता है।
- जब हम लंबे समय तक तनाव में रहते हैं, तो इसके कारण, शरीर में काफी कमजोरी आ जाती है और एड्रेनल ग्लैंड्स, पर्याप्त मात्रा में भी स्ट्रेस हार्मोन नहीं बना पाती हैं।
- जिस तरह स्ट्रेस हार्मोन का बढ़ना सही नहीं है, उसी तरह, इसके सामान्य से कम होने के भी नुकसान होते हैं।
- इसके कारण, शरीर में हार्मोनल इंबैलेंस होता है और इस हार्मोनल इंबैलेंस के कारण, बीपी लो हो जाता है।
- बहुत अधिक तनाव, वासोवागल सिंकोप का भी कारण बन सकता है। इसकी वजह से नर्व्स, दिल को धीमे धड़कने का सिग्नल देती हैं और ब्लड वेसल्स चौड़ी हो जाती हैं।
- इसके कारण, बीपी अचानक से ड्रॉप हो जाता है और दिल की धड़कन धीमी हो जाती है। इसकी वजह से मस्तिष्क में ब्लड फ्लो कम हो जाता है और थकान, कमजोरी व बेहोशी हो सकती है।
- वहीं, कई बार अधिक स्ट्रेस में रहने के कारण, व्यक्ति मील्स स्किप करने लगता हैं, डिहाइड्रेट रहता है और नींद भी पूर नहीं होती है। इसकी वजह से भी बीपी लो हो सकता है।
- जिन लोगों का बीपी पहले से ही लो रहता है, वे अगर स्ट्रेस लें तो दिक्कत और बढ़ सकती है।

नहीं छूट रही है जंक फूड की लत ये टिप्स आएंगे आपके काम

खास मौके पर अपने पसंदीदा फूड का मजा लेने में कोई हर्ज नहीं है, पर यह आपके नियमित आहार का हिस्सा बन जाए तो फिर ऐसी लत आपके सेहत के लिए नुकसानदेह हो जाती है। जी हां, हम बात कर रहे हैं जंक फूड की लत की जो आज के समय में बच्चों से लेकर बड़ों तक सभी को अपना शिकार बना चुकी है।

इस लत के चलते लोग पेट से जुड़ी समस्याओं से लेकर डायबिटीज और दूसरी गंभीर बीमारियों का तेजी से शिकार हो रहे हैं। ऐसे में समय रहते इस लत पर काबू पाना बेहद जरूरी है, पर स्वाद और शौक के चलते यह लत आसानी से नहीं छूट पाती है। अगर आपके साथ भी कुछ ऐसी ही समस्या पेश आ रही है तो हमारा यह आर्टिकल आपके बेहद काम आ सकता है। इस आर्टिकल में हम आपको कुछ ऐसे टिप्स बताने जा रहे हैं जो जंक फूड की लत को छोड़ने में मददगार हो सकते हैं।

प्रोटीन का सेवन बढ़ाएं

प्रोटीन सबसे अधिक संतुष्टिदायक पोषक तत्व है, जो आपके आहार शैली पर और भोजन विकल्पों पर इसका शक्तिशाली प्रभाव पड़ता है। मेडिकल क्षेत्र में किए गए शोध बताते हैं कि प्रोटीन का सेवन फूड क्रेविंग और अतिरिक्त भूख की इच्छा को कम करने में सहायक होता है। इसलिए फास्ट फूड की क्रेविंग को कम करने के लिए आपको प्रोटीन युक्त खाद्य पदार्थों का अधिक से अधिक सेवन करना चाहिए। इसके लिए आहार में अंडे, दूध, दही, पनीर, नट्स और बीज जैसी चीजों को शामिल कर सकते हैं।

मानसिक तनाव कम करें

तनाव की स्थिति में फूड क्रेविंग की अधिक इच्छा होती है, ऐसे में क्रेविंग पर काबू पाने के लिए तनाव पर नियंत्रण पाना जरूरी है। इसलिए जब भी आपको तनाव महसूस हो तो कुछ खाने की सोचने से पहले खुद को तनाव मुक्त करने की कोशिश करें। इसके लिए आप डीप ब्रीदिंग को आजमा सकते हैं, डीप ब्रीदिंग तनाव को तुरंत नियंत्रित करने में काफी मददगार होती है। इसके अलावा तनाव महसूस होने पर आप अपना पसंदीदा गाना सुन सकते हैं या फिर अपने पसंद की गतिविधि में समय बिताना भी तनाव से राहत दिला सकता है।

भरपूर नींद लें

नींद की कमी शारीरिक और मानसिक समस्याओं की वजह बनने के साथ ही आपके व्यवहार में भी बड़ा बदलाव लाता है। ऐसे में अक्सर लोग या तो भूख से कम खाते हैं या फिर अतिरिक्त भूख की इच्छा उन्हे सताती है। दोनों ही स्थिति में जंक फूड का सेवन बढ़ सकता है, क्योंकि जब भोजन कम लेते हैं तो आपको बाहरी चीजें खाने का मन करता है। इसके अलावा जब आपको अतिरिक्त भूख लगती है तो भी आप जंक फूड के बारे में ही सोचते हैं। इसलिए इस लत पर काबू पाने के लिए जरूरी है कि आप अपनी नींद को पूरी करें और जीवनशैली को संयमित रखें।

हेल्दी स्नैक्स को चुने

क्रेविंग होने पर जंक फूड खाने से बचने के लिए जरूरी है कि आप इसके हेल्दी स्नैक्स विकल्पों को चुने। इसके लिए आप फल, स्मूदी, भुने हुए नट्स, ड्राई फ्रूट्स से बने लड्डू का सेवन कर सकते हैं। ऐसी चीजों के सेवन से जहां क्रेविंग आसानी से शांत होगी तो वहीं इससे शरीर को पर्याप्त मात्रा में पोषण भी मिलेगा।

संक्षिप्त समाचार

रूस के विदेश मंत्री बोले- भारत-चीन को लड़ाने की कोशिश में पश्चिमी देश, एशिया-प्रशांत क्षेत्र का नाम बदला

मास्को, एजेंसी। रूस के विदेश मंत्री सर्गेई लावरोव ने गुरुवार को कहा कि पश्चिमी देश भारत और चीन को आपस में भिड़ाने की कोशिश कर रहे हैं। लावरोव ने कल्चर विदआउट बॉर्डर्स क्लब के एक कार्यक्रम में यह बात कही। उन्होंने कहा- एशिया-प्रशांत क्षेत्र को पश्चिमी देश अब इंडो-पैसिफिक कहने लगे हैं। ऐसा करके वे अपनी नीति को चीन के खिलाफ साफ तौर पर दिखा रहे हैं। इससे वे हमारे दोस्त और पड़ोसी देश भारत और चीन को आपस में टकराने की कोशिश कर रहे हैं। लावरोव ने कहा कि पश्चिमी देश एशिया में आसियान को भी कमजोर करने की कोशिश कर रहे हैं। आसियान दक्षिण-पूर्व एशिया के 10 देशों का समूह है, जो आर्थिक और सुरक्षा सहयोग को बढ़ावा देता है। इन देशों में इंडोनेशिया, मलेशिया, फिलीपींस, सिंगापुर, थाईलैंड, ब्रुनेई, म्यांमार, कंबोडिया, लाओस और वियतनाम शामिल हैं।

आईसीसी के मुख्य अभियोजक पर ट्रंप की पाबंदी, कामकाज में रुकावट

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप द्वारा फरवरी में लगाए गए प्रतिबंधों की पृष्ठभूमि में अंतरराष्ट्रीय अपराध न्यायालय (आईसीसी) के मुख्य अभियोजक अपने ईमेल नहीं देख पा रहे हैं और उनके बैंक खातों से लेनदेन पर रोक लगा दी गई है। ट्रंप द्वारा आईसीसी के मुख्य अभियोजक करीम खान पर फरवरी में लगाए गए प्रतिबंधों के बाद आईसीसी कर्मियों के सामने इस तरह की अड़चनें आ रही हैं। आईसीसी के वर्तमान और पूर्व अधिकारियों, अंतरराष्ट्रीय वकीलों और मानवाधिकार अधिवक्ताओं के साथ साक्षात्कारों में ये बातें सामने आईं। हेग स्थित न्यायालय के अमेरिकी कर्मचारियों को कहा गया है कि अगर वे अमेरिका की यात्रा करते हैं तो उनकी गिरफ्तारी का खतरा है। कुछ गैर-सरकारी संगठनों ने आईसीसी के साथ काम करना बंद कर दिया है। ह्यूमन राइट्स वॉच की अंतरराष्ट्रीय न्याय निदेशक लिज ईवनसन ने कहा, ये प्रतिबंध पीड़ितों को न्याय पाने से रोकेंगे।

फुटबॉल स्टेडियम के बाहर अनियंत्रित कार ने भीड़ को रौंदा

मैड्रिड, एजेंसी। स्पेन में एक अनियंत्रित कार ने फुटबॉल स्टेडियम के बाहर मौजूद भीड़ को रौंद दिया। इस हादसे में 13 लोग घायल हुए हैं। यह हादसा बार्सिलोना में उस वक्त हुआ, जब स्पेनिश लीग टूर्नामेंट में बार्सिलोना का मुकाबला एस्पेनोल से हो रहा था। मैच शुरू होने के कुछ मिनट बाद ही स्टेडियम के बाहर एक अनियंत्रित कार ने भीड़ को रौंद दिया। हादसे में घायल सात लोगों को अस्पताल में भर्ती कराया गया, वहीं बाकी लोगों का घटनास्थल पर ही इलाज किया गया। पुलिस ने कहा है कि यह जानबूझकर किया गया हमला नहीं था और कार चालक गाड़ी से नियंत्रण खो बैठा, जिससे यह हादसा हुआ।

ट्रंप के यूएसएआईडी के फंड में कटौती से जा रही बच्चों की जान

वाशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने बीते दिनों यूएसएआईडी के फंड में कटौती करने का फैसला किया था। ट्रंप का यह फैसला दुनिया के कई बेहद गरीब इलाकों के बच्चों की जिंदगी पर भारी पड़ रहा है। गरीब देशों के कई कुपोषित बच्चों को यूएसएड के फंड में कटौती से खाना नहीं मिल पा रहा है, जिससे कई बच्चों की मौत हो चुकी है। खासकर बेहद गरीब अफ्रीकी देशों में इसका सबसे ज्यादा असर पड़ा है। ये देश जनकल्याणकारी कामों के लिए अमेरिकी मदद पर काफी निर्भर हैं। हालांकि इस साल ट्रंप प्रशासन द्वारा अमेरिकी मदद में 90 प्रतिशत की कटौती कर दी है, जिससे अफ्रीकी देशों में हालात बिगड़ गए हैं। बच्चों के पोषण के लिए चल रहीं योजनाएं सबसे ज्यादा प्रभावित हुई हैं।

पाकिस्तान के डिप्टी पीएम बोले

भारत-पाकिस्तान सीजफायर 18 मई तक बढ़ा

दावा- पाकिस्तान ने सीजफायर के लिए नहीं कहा, भारत पहले तैयार हुआ

इस्लामाबाद, एजेंसी। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने बृहस्पतिवार को संसद में दावा किया कि पाकिस्तान और भारत के सैन्य अभियान महानिदेशकों ने सीजफायर पर चर्चा के लिए हॉटलाइन पर बात की। द डॉन की रिपोर्ट के मुताबिक उन्होंने कहा कि दोनों देशों के डीजीएमओ के बीच अब 18 मई को बातचीत होगी।

भारत और पाकिस्तान के बीच 4 दिन तक सीमा पार से ड्रोन और मिसाइल हमलों के बाद सैन्य संघर्ष रोकने के लिए 10 मई को सहमति बनी थी। इसे 12 मई तक बढ़ाया गया और फिर 14 मई और फिर 18 मई तक किया गया। उन्होंने कहा कि दोनों देशों के बीच राजनीतिक वार्ता होगी और सभी समस्याओं का हल निकालने पर बात की जाएगी। उन्होंने कहा- हमने पूरी दुनिया को साफ कर दिया है कि हम हर मुद्दे पर खुलकर और पूरी बातचीत करने के लिए तैयार हैं। डार ने यह भी दावा किया पाकिस्तान ने सीजफायर की कोई मांग नहीं की थी।

डार बोले- यूएस विदेश मंत्री के फोन के बाद युद्धविराम किया

एसोसिएटेड प्रेस ऑफ पाकिस्तान के मुताबिक, डिप्टी पीएम डार ने दावा किया हाल ही में भारत के साथ हुए तनाव के दौरान पाकिस्तान ने सीजफायर की कोई मांग नहीं की थी। उनके मुताबिक, यह युद्धविराम तब शुरू हुआ जब अमेरिका के विदेश मंत्री मार्को रुबियो ने फोन करके बताया कि भारत अब हमला रोकने के लिए तैयार है।

यूएन प्रस्ताव के मुताबिक कश्मीर मुद्दे का हल निकले

पाकिस्तान पीएम ने कहा कि कश्मीर मुद्दे को यूएन प्रस्ताव के मुताबिक सुलझाया जाना चाहिए और उसके बाद बिजनेस की बातचीत की जाएगी। भारत ने नीलम, झेलम में पाकिस्तान के जल संसाधनों पर हमला किया, लेकिन सरकार ने संयम दिखाया। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने पहलगाम हमले के जांच की मांग की थी और सहयोग करने पर सहमति जताई थी, लेकिन भारत ने रात के अंधेरे में हमला किया।

पाकिस्तान के राष्ट्रपति जरदारी घायल सैनिकों से हॉस्पिटल में मिले

पाकिस्तान के राष्ट्रपति आसिफ अली जरदारी ने रावलपिंडी के मिलिट्री हॉस्पिटल में भारतीय हमले के दौरान घायल सैनिकों से मुलाकात की। उन्होंने इन सैनिकों की बहादुरी और देशभक्ति की प्रशंसा की। डॉन न्यूज के मुताबिक जरदारी ने कहा कि देश ने दुश्मन के हमलों का डटकर मुकाबला किया। मोदी सरकार राजनीतिक मकसद के लिए पाकिस्तान के खिलाफ आक्रामकता का इस्तेमाल करना चाहती है।

डार ने कहा कि पाकिस्तान ने शुरू से ही संयम बरता और किसी भी तरह की सैन्य कार्रवाई से पहले अपने सभी मित्र देशों को सूचित कर दिया था। उन्होंने कहा कि पाकिस्तान ने अपने दोस्तों से साफ कहा था कि वह पहले हमला नहीं करेगा, लेकिन अगर भारत उकसाएगा, तो निश्चित रूप से जवाब देगा। इससे पहले पाकिस्तानी पीएम शहबाज शरीफ ने बुधवार को पंजाब प्रांत के सियालकोट पसरूर छावनी में पाकिस्तानी सैनिकों को संबोधित किया था। इस दौरान उन्होंने कहा कि हमने भारत के अहंकार को धूल में मिला दिया है। डॉन न्यूज के मुताबिक पाक पीएम ने कहा- दुश्मन, जो हमसे बड़ा है, उसे इस बात पर घमंड था कि उसके पास अरबों डॉलर के मिलिट्री इक्विपमेंट हैं। हमने उसे बहुत बड़ा झटका दिया है। हम युद्ध और शांति दोनों के लिए तैयार हैं। चुनाव आपका (भारत) है। शहबाज शरीफ ने सिंधु जल संधि को स्थगित करने पर भारत को चेतावनी भी दी। उन्होंने कहा- अगर आप हमारा पानी रोकते हैं, तो यह हमारी रेड लाइन है। पानी पर हमारा हक है।

ट्रंप का पश्चिम एशिया दौरा पूरा; कई नेताओं से मिले, धार्मिक स्थल पर भी गए अमेरिकी राष्ट्रपति

अबू धाबी , एजेंसी। अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप का पश्चिम एशिया पूरा हो गया है। अपने दौरे के दौरान ट्रंप ने कई मुलाकातें की और कई अहम जगहों का दौरा भी किया। जिसमें अब्राहमिक फैमिली हाउस का दौरा भी शामिल है।

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप ने अपने पश्चिम एशिया दौरे का समापन संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) की राजधानी अबू धाबी में किया। अपने दौरे के आखिरी दिन ट्रंप ने एक कारोबारी सम्मेलन में हिस्सा लिया और उसके बाद एक विशेष धार्मिक स्थल - अब्राहमिक फैमिली हाउस का दौरा किया। यह धार्मिक स्थल एकता और सहिष्णुता का प्रतीक है, जहां एक साथ एक मस्जिद, एक चर्च और एक सिनेगॉग (यहूदी उपासना स्थल) मौजूद हैं। इसे अब्राहम अकॉर्ड्स के तहत बनाया गया था, जो एक ऐतिहासिक समझौता है। इसके तहत यूएई और कुछ अन्य अरब देशों ने इस्राइल को आधिकारिक रूप से मान्यता दी थी। यह तीन प्रमुख धर्मों – इस्लाम, ईसाई धर्म और यहूदी धर्म – को जोड़ने वाला एक प्रतीक स्थल है। अमेरिकी राष्टपति डोनाल्ड ट्रंप ने अबू धाबी में शुक्रवार सुबह एक व्यापारिक बैठक में हिस्सा लिया। इस बैठक में उन्होंने यूएई के व्यापार जगत के प्रमुख लोगों से मुलाकात की। इस दौरान व्यापार और निवेश से जुड़े मुद्दों पर चर्चा हुई।

वहीं ट्रंप की मौजूदगी के दौरान अबू धाबी की सरकारी एयरलाइन एतिहाद एयरवेज ने घोषणा की कि वह 28 बोइंग विमान खरीदेगी। इनमें बोइंग 787 और 777एक्स मॉडल के विमान शामिल हैं। यह सभी विमान जीई इंजन से लैस होंगे और इनके साथ एक सेवाओं से जुड़ा पैकेज भी मिलेगा। हालांकि बोइंग कंपनी की ओर से अभी तक इस सौदे की आधिकारिक पुष्टि नहीं की गई है। इस सौदे को अमेरिका और यूएई के बीच बढ़ते व्यापारिक संबंधों का संकेत माना जा रहा है। ट्रंप इससे पहले सऊदी अरब और कतर भी गए थे, जहां कतर ने अपनी एयरलाइन कतर एयरवेज के लिए बोइंग विमानों का एक बड़ा ऑर्डर दिया।

डोनाल्ड ट्रंप के इस दौरे के दौरान वेस्ट बैंक और गाजा पट्टी में हिंसा की घटनाएं भी हुईं। गाजा में 120 से ज्यादा लोगों की मौत की खबर है। हालांकि ट्रंप की ओर से इस पर कोई सीधी प्रतिक्रिया नहीं आई।

सऊदी अरब के अलावा कई मुसलमान देशों ने खदेड़े पाकिस्तानी भिखारी, 5000 है आंकड़ा; संसद में बताया

रियाद, एजेंसी। सऊदी अरब से बीते साल जनवरी से अब तक 5033 पाकिस्तानी भिखारियों को वापस भेजा गया है। यह जानकारी पाकिस्तान की संसद में गृह मंत्री मोहसिन नकवी की ओर से दी गई है। उन्होंने कहा कि यह आंकड़ा बीते 16 महीनों का है। यही नहीं उनकी ओर से बताया गया कि सऊदी अरब के अलावा पाकिस्तान से लोग मलयेशिया, इराक, यूएई, ओमान और कतर जैसे देशों में भी भीख के लिए जाते हैं। ये सभी इस्लामिक मुल्क हैं और पाकिस्तान के गरीब तबके के लोगों को लगता है कि यहां भीख मांगकर भी गुजारा किया जा सकता है। सऊदी अरब तो हर साल ही हजारों पाकिस्तानी भिखारियों को वापस भेजता है। उसने पाक सरकार से भी कहा था कि इन्हें रोकने के लिए कदम उठाए। मंत्री ने बताया कि सऊदी अरब, इराक, मलयेशिया, ओमान, कतर और यूएई से कुल 5402 भिखारियों को वापस भेजा गया है। यह आंकड़ा जनवरी 2024 से अब तक का है। इनमें से 4850 लोगों को सऊदी अरब समेत इन देशों ने 2024 में वापस भेज दिया था। इसके अलावा 552 पाकिस्तानी भिखारियों को इस साल ही लौटाया गया है। जानकारी के मुताबिक पाकिस्तान से गए ज्यादातर भिखारी सऊदी अरब ही जाते हैं। इसकी वजह यह है कि वे वहां मक्का और मदीना के आसपास बैठते हैं। वहां ये दुनिया भर से आने वाले जायरीनों से भीख मांगते हैं। मजहबी यात्रा पर निकले लोग अकसर उन्हें भीख दे भी देते हैं और इसके चलते पाकिस्तान से बड़ी संख्या में लोग भीख मांगने के मकसद से ही पहुंचते रहे हैं, जिस पर सऊदी अऱब ने भी सख्त ऐतराज कई बार जताया है।

पाकिस्तान के इस राज्य से सबसे ज्यादा सऊदी अरब जाते हैं भिखारी

पाकिस्तान की संसद में जो आंकड़ा पेश किया गया है, उसके अनुसार भीख मांगने के लिए जाने वालों में सबसे ज्यादा लोग पाकिस्तान के सिंध प्रांत के हैं। सिंध से अकेले सऊदी अरब जाने वालों की संख्या ही 2,428 है। इसके अलावा पंजाब से 1098 गए और खैबर पख्तूनख्वा से 819 लोग चले गए। बलूचिस्तान से 117 लोग सऊदी अरब गए। यह उन भिखारियों का डेटा है, जिन्हें वापस भेजा गया है। माना जा रहा है कि संख्या और अधिक हो सकती है क्योंकि ऐसे भी लोग है, जो अब भी वहां भीख मांग रहे हैं। पाकिस्तान से लोग इराक जैसे देश में भी भीख मांगने के लिए गए, यह चौंकाने वाला तथ्य है। ऐसा इसलिए क्योंकि इराक खुद ही बुरे हालातों से गुजर रहा है और वहां भी पाकिस्तानियों का भीखना मांगना उनकी बदहाली को बयां करता है।

लंदन में भगोड़े नीरव मोदी की जमानत याचिका खारिज

लंदन, एजेंसी। पीएनबी घोटाला मामले में मुख्य आरोपी भगोड़े नीरव मोदी की जमानत याचिका खारिज की गई है। लंदन की किंग्स बेंच डिवीजन हाईकोर्ट ने सुनवाई के बाद इसे खारिज किया। भारत की ओर से सीबीआई के वकील ने नीरव की दलीलों का विरोध किया था। नीरव मोदी पर पंजाब नेशनल बैंक से लोन लेकर करीब 14 हजार करोड़ रुपए की धोखाधड़ी करने का आरोप है। घोटाला सामने आने के बाद वह जनवरी 2018 में देश छोड़कर फरार हो गया था। नीरव को साउथ-वेस्ट लंदन से 19 मार्च, 2019 को गिरफ्तार किया गया था। तभी से वो वहां की जेल में है। भारत में नीरव के खिलाफ धोखाधड़ी के तीन केस हैं। पंजाब नेशनल बैंक (पीएनबी) के साथ धोखाधड़ी का सीबीआई मामला। दूसरा, पीएनबी मामले मनी लॉन्ड्रिंग का केस और तीसरा सीबीआई की कार्रवाई में सबूतों और गवाहों के साथ छेड़छाड़ का मामला है। फरवरी 2021 में ब्रिटेन की वेस्टमिन्स्टर कोर्ट में नीरव के प्रत्यर्पण पर सुनवाई की थी। कोर्ट ने भी नीरव को भारत भेजने की मंजूरी दे दी थी। इसके बाद 15 अप्रैल 2021 को ब्रिटेन की होम सेक्रेटरी प्रीति पटेल ने भी नीरव के प्रत्यर्पण का आदेश दिया था। इसके बाद लंदन हाईकोर्ट ने नीरव के प्रत्यर्पण का फैसला सुनाया था। हालांकि, अन्य कानूनी प्रक्रिया के चलते नीरव का प्रत्यर्पण अब तक नहीं हो पाया है।

कब और कैसे हुआ था पीएनबी घोटाला?– घोटाले की शुरुआत पीएनबी की मुंबई स्थित ब्रेडी हाउस ब्रांच से 2011 में हुई। फर्जी लेटर ऑफ अंडरटेकिंग्स (एलओयू) के जरिए घोटाला किया गया। साल 2011 से 2018 के बीच हजारों करोड़ की रकम विदेशी खातों में ट्रांसफर की गई। फ्रॉड का खुलासा फरवरी 2018 के पहले हफ्ते में हुआ। पंजाब नेशनल बैंक ने सेबी और बॉम्बे स्टॉक एक्सचेंज को 11,356 करोड़ रुपए के घोटाले की जानकारी दी। बाद में पीएनबी ने 1,300 करोड़ के नए फ्रॉड के बारे में सीबीआई को बताया।

1992 में हुई थी प्रत्यर्पण संधि– भारत और ब्रिटेन के बीच 22 सितंबर 1992 को प्रत्यर्पण संधि पर हस्ताक्षर हुए थे, लेकिन पहले आरोपी को भारत लाने में 24 साल का वक्त लग गया। हत्या के आरोपी समीरभाई वीनूभाई पटेल को 19 अक्टूबर 2016 को प्रत्यर्पण कर भारत लाया गया था। उसके बाद फरवरी 2020 में संजीव कुमार चावला को भारत लाया गया। संजीव को मैच फिक्सिंग के मामले में गिरफ्तार किया गया था। यानी, ब्रिटेन के साथ प्रत्यर्पण संधि हुए 28 साल से ज्यादा बीत गए हैं, लेकिन अब तक सिर्फ दो आरोपियों को ही लाने में कामयाबी मिली है। भारत से तीन आरोपियों को ब्रिटेन भेजा गया अभी तक तीन आरोपियों को भारत से ब्रिटेन भेजा गया है। सबसे पहले 8 जुलाई 2009 को सोमैया केतन सुरेंद्र को प्रत्यर्पित किया गया था, जो केन्याई नागरिक थे। उन्हें धोखाधड़ी के मामले में भेजा गया था। उसके बाद किडनैपिंग के मामले में गिरफ्तार किए गए कुलविंदर सिंह को 14 नवंबर 2013 को ब्रिटेन को सौंपा गया।

भूकंप में ढही बैंकॉक की इमारत बनाने वालों पर शिकंजा, धांधली के आरोपों के बाद बिल्डर का आत्मसमर्पण

बैंकॉक, एजेंसी। मार्च महीने के अंत में म्यांमार और थाईलैंड में आए विनाशकारी भूकंप के कारण बैंकॉक में एक गगनचुंबी इमारत गिरने के मामले में धांधली के आरोपों के बाद उसे बनाने वाले बिल्डर ने आत्मसमर्पण कर दिया है। इस भूकंप में म्यांमार और थाईलैंड में करीब पांच हजार से ज्यादा लोगों की मौत हो गई थी।

म्यांमार में इस साल 28 मार्च को आए विनाशकारी भूकंप के कारण थाईलैंड की राजधानी बैंकॉक में एक ऊंची इमारत के ढहने के मामले में एक दिग्गज बिल्डर, डिजाइनर और इंजीनियर्स ने शुक्रवार को आपराधिक लापरवाही के आरोप में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण कर दिया है।

मामले में बैंकॉक के उप पुलिस प्रमुख नोप्पासिन पूनसावत ने बताया कि भवन परियोजना के मुख्य थाई ठेकेदार, इटालियन–थाई डेवलपमेंट कंपनी के अध्यक्ष प्रेमचाई कर्णसुता, डिजाइनरों और इंजीनियरों समेत 17 लोगों पर पेशेवर लापरवाही के कारण मौत का आरोप लगाया गया है। अब इस हादसे को लेकर पुलिस ने एक बड़ा कदम उठाया है, जिसमें 92 लोगों की मौत हो गई थी। पुलिस के मुताबिक, जिन लोगों पर आरोप है, उन्होंने पुलिस के सामने जाकर आरोपों से इनकार किया है। इनमें से कई ने पहले भी मीडिया में आरोपों को झूठा बताया था। 28 मार्च को आएर विनाशकारी भूकंप का केंद्र म्यांमार था, लेकिन उसका असर थाईलैंड में भी महसूस हुआ। इस दौरान सिर्फ यही एक इमारत गिरी। इसमें काम कर रहे दर्जनों मजदूर और कर्मचारी मलबे में दब गए, जिसमें कुल 92 लोगों की मौत की पुष्टि हो चुकी है, जबकि कुछ लोग अब भी लापता हैं।

इशाक डार ने अपनी ही संसद में फर्जी खबर के जरिए दिखाया बड़बोलापन

पाकिस्तानी मीडिया ने ही खोल दी पोल

इस्लामाबाद , एजेंसी। भारत से संघर्ष में मात खाने के बाद पाकिस्तानी सेना फर्जी प्रोपेगैंडा कर अपने देश की जनता की नजरों में हीरो बनने की कोशिश में जुटी है। इसके लिए सोशल मीडिया पर कई फर्जी तस्वीरें और दावे साझा किए जा रहे हैं। पाकिस्तान के विदेश मंत्री तो वहां की संसद में भी फर्जी दावा कर गए, लेकिन फैक्ट चेक में पकड़े जाने के बाद उनकी खूब किरकिरी हो रही है।

पाकिस्तान के उप-प्रधानमंत्री और विदेश मंत्री इशाक डार ने पाकिस्तानी सीनेट में एक विदेशी अखबार की फर्जी तस्वीर का जिक्र कर झूठा दावा किया कि पाकिस्तानी वायुसेना संघर्ष में भारतीय वायुसेना पर भारी पड़ी। इस दौरान पाकिस्तानी विदेश मंत्री ने ब्रिटिश अखबार डेली टेलीग्राफ के एक लेख की तस्वीर का हवाला दिया। हालांकि पाकिस्तानी मीडिया ने ही अपने विदेश मंत्री के झूठ का पर्दाफाश कर दिया। फैक्ट चेक में विदेशी अखबार की तस्वीर फर्जी निकली है।

पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने गुरुवार को पाकिस्तानी सीनेट में बताया कि ब्रिटिश अखबार टेलीग्राफ ने लिखा कि पाकिस्तानी वायुसेना, आकाश में निर्विवाद किंग रही। इस पर पाकिस्तान के एक जाने-माने अखबार डॉन ने ही फैक्ट चेक कर अपने विदेश मंत्री के दावे को खारिज कर दिया। अखबार ने बताया कि इशाक डार ने जिस खबर का जिक्र किया, वह फर्जी है और वह सिर्फ सोशल मीडिया पर वायरल एक फर्जी तस्वीर है। पाकिस्तानी अखबार ने वायरल तस्वीर की जांच की तो उसे तस्वीर में कई खामियां नजर आईं। जांच में पता चला कि डेली टेलीग्राफ ने ऐसी कोई खबर प्रकाशित ही नहीं की।

पाकिस्तानी अखबार ने फैक्ट चेक के जरिए पता लगाया कि वायरल तस्वीर में जो लेख है, उसमें स्पेलिंग की गलतियां थीं, जो एक प्रतिष्ठित अखबार के संपादकीय में नहीं हो सकतीं। पेज का लेआउट भी डेली टेलीग्राफ के लेआउट से मेल नहीं खाता। पाकिस्तान के कई अन्य पत्रकारों ने भी इस तस्वीर का फैक्ट चेक किया और इस खबर को फर्जी पाया। एक यूजर ने डेली टेलीग्राफ की तस्वीर को एआई जेनरेट बताया और संसद में दिए उप-प्रधानमंत्री के दावे को शर्मनाक करार दिया। गौरतलब है कि ऑपरेशन सिंदूर में भारत से बुरी तरह से मात खाने के बाद पाकिस्तानी सेना और सरकार अपने देश में फर्जी प्रोपेगैंडा चला रहे हैं ताकि जनता की नजरों में हीरो बनकर बेइज्जती से बचा जा सके। उल्लेखनीय है कि कई अंतरराष्ट्रीय रक्षा विशेषज्ञों ने भारत-पाकिस्तान संघर्ष में भारत को विजेता बताया है और दावा किया कि पाकिस्तानी वायुसेना, भारतीय वायुसेना के सामने कहीं न टिक सकी। भारत ने पूरी सटीकता और सुनियोजित तरीके से हमले किए, जबकि पाकिस्तानी वायुसेना के ड्रोन और लड़ाकू विमान हवा में ही तबाह कर दिए गए। भारत ने पाकिस्तान के कई सैन्य एयरबेस को निशाना बनाया, जिसमें उनके कई अहम एयरबेस को भारी नुकसान हुआ। पाकिस्तान के विदेश मंत्री इशाक डार ने भारत के साथ बातचीत की अपील की है। इशाक डार का यह बयान ऐसे वक्त सामने आया है, जब भारत और पाकिस्तान के बीच संघर्षविराम चल रहा है। पाकिस्तानी सीनेट में इशाक डार ने दावा किया कि सैन्य स्तर पर हुई बातचीत में संघर्षविराम 18 मई तक बढ़ गया है।

न्यूयॉर्क सीनेट में भारतीय संविधान का सम्मान, 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर प्रस्ताव पारित

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिकी राज्य न्यूयॉर्क की सीनेट में औपचारिक रूप से भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ के अवसर पर इसका सम्मान करते हुए एक प्रस्ताव पारित किया गया। प्रस्ताव में भारतीय संविधान को राष्ट्र के रूप में भारत की निरंतर प्रगति के लिए एक मार्गदर्शक ढांचे के रूप में मान्यता दी गई है और देश के लोकतांत्रिक मूल्यों का जश्न मनाया गया। न्यूयॉर्क स्टेट सीनेटर जेरेमी कूनी ने यह प्रस्ताव पेश किया। जेरेमी कूनी वर्तमान में न्यूयॉर्क स्टेट सीनेट में सेवारत भारतीय मूल के एकमात्र सदस्य हैं। कूनी के प्रस्ताव को बुधवार को एक समारोह में पारित किया गया। इस कार्यक्रम में न्यूयॉर्क में भारत के महावाणिज्यदूत बिनय प्रधान के साथ-साथ न्यूयॉर्क में भारतीय-अमेरिकी समुदाय के लोग भी शामिल हुए। जेरेमी कूनी ने कहा, मैं भारतीय संविधान की 75वीं वर्षगांठ के सम्मान में यह प्रस्ताव पेश कर रहा हूं, यह भारतीय स्वतंत्रता और उन कई बहादुर भारतीयों का जश्न मनाने का समय है, जिन्होंने अपने देशवासियों की भलाई के लिए अपनी जान जोखिम में डाल दी। जेरेमी कूपर ने कहा कि यह दिन सिर्फ़ भारत में ही नहीं बल्कि पूरी दुनिया में मनाया जाना चाहिए। पूरी दुनिया में भारतीय अपने समुदायों में स्थायी प्रभाव डाल रहे हैं।

खबर-खास

कस्तुरबा गाँधी आवासीय विद्यालय में समर केम्प का समापन

बसना(समय दर्शन)। शासकीय कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय बंसुला में दिनांक 20अप्रेल 2025 से 15मई 2025 तक शालेय स्तर पर समर कैंप का आयोजन उच्च कार्यालय के निर्देशानुसार किया गया ।

जिसमें बालिकाओं ने विभिन्न क्रियाकलापों में भाग लिया। जिसके तहत अध्ययन अध्यापन, स्पोकन इंग्लिश, सिलाई, क्राफ्ट मेकिंग, योग विधि, जुंबा पेंटिंग, केक निर्माण, कंप्यूटर, कहानी पुस्तकों का वाचन, सुलेख लेखन, ब्यूटी पार्लर कोर्स आदि कार्यों को सिखाया गया। सभी विधाओं का आयोजन श्रीमती गीतांजलि नाग अधीक्षिका कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय के नेतृत्व में कराया गया। समर कैम्प का विधिवत संचालन पश्चात दिनांक 15 मई 2025 को समर कैंप का समापन कराया गया।

सिमगा कन्या छात्रावास की चमकती प्रतिभाएं, छ्त्र बोर्ड 10वीं परीक्षा में 100त्न सफ्लता, रितु कुर्रे बनी स्कूल टॉपर

सिमगा (बलौदाबाजार)। छत्तीसगढ़ माध्यमिक शिक्षा मंडल द्वारा आयोजित कक्षा 10वीं की बोर्ड परीक्षा 2025 में शासकीय प्री-मैट्रिक कन्या छात्रावास सिमगा की छात्राओं ने शानदार प्रदर्शन करते हुए 100त्न परिणाम दर्ज किया है। छात्रावास में रह रही सभी 25 छात्राएं परीक्षा में सफ्ल रहीं, जिससे संस्था का प्रदर्शन जिले में सराहनीय रहा। छात्रावास अधीक्षिका श्रीमती अंजनी ने बताया कि विगत चार वर्षों से छात्रावास की छात्राएं विद्यालय स्तर पर अव्वल आ रही हैं, और इस वर्ष भी यह सिलसिला कायम रहा।

इस वर्ष की परीक्षाओं में रितु कुर्रे, पिता श्री तोरन कुर्रे, ने 88.66त्न अंक प्राप्त कर पीएम श्री हिंदी माध्यम स्कूल सिमगा की टॉपर बनीं। रितु ने अपनी मेहनत और लगन से यह मुकाम हासिल किया है और उनका सपना है कि वे भविष्य में हृदय रोग विशेषज्ञ (कार्डियोलॉजिस्ट) बनें। वहीं धनेश्वरी भारती, पिता श्री सहदेव भारती, ग्राम बगौद नयापारा निवासी, ने 87त्न अंक अर्जित कर विद्यालय में दूसरा स्थान प्राप्त किया है। इसके अलावा छात्रा पूर्णिमा नवरंग ने 76त्न तथा वर्षा महिलंगे ने 71 प्रतिशत अंक हासिल कर सफ्लता पाई है। यह सफ्लता छात्राओं की कठिन मेहनत, अनुशासित दिनचर्या और छात्रावास में उपलब्ध शैक्षणिक माहौल का प्रतिफ्ल है। इस उपलब्धि पर शिक्षा विभाग, स्थानीय प्रशासन और अभिभावकों ने छात्राओं एवं अधीक्षिका सहित पूरे स्टाफ को बधाई दी है। छात्रावास की यह निरंतर सफ्लता क्षेत्र की बालिकाओं के लिए प्रेरणादायी है।

होमगार्ड में महिला-पुरूष नगर सैनिकों की भर्ती : लिखित परीक्षा 22 जून को

धमतरी (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ के होमगार्ड विभाग में महिला एवं पुरूष नगर सैनिकों की भर्ती के लिए लिखित परीक्षा 22 जून 2025, रविवार को आयोजित होगी। यह परीक्षा व्यवसायिक परीक्षा मण्डल द्वारा ली जाएगी। इस परीक्षा के माध्यम से एक हजार 715 महिला नगर सैनिकों (छात्रावास ड्यूटी) और 500 पुरूष नगर सैनिकों की भर्ती होगी।

राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक कार्यक्रम के तहत भव्य तिरंगा यात्रा आयोजित

तिरंगा यात्रा के माध्यम से नागरिकों ने दी देश के जवानों को श्रद्धांजलि

विधायक, महापौर व नागरिकों की सहभागिता से तिरंगा यात्रा संपन्न

जिले में तिरंगा यात्रा के जरिए दिखी देशभक्ति की एकजुटता

दुर्ग (समय दर्शन)। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक कार्यक्रम के अंतर्गत दुर्ग जिले एक के बाद एक भव्य तिरंगा यात्राओं का आयोजन किया गया, जिसमें दुर्ग शहर विधायक श्री गजेन्द्र यादव एवं दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर और बड़ी संख्या में आम नागरिकों, जनप्रतिनिधियों, स्कूली बच्चों और सामाजिक संगठनों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। यह आयोजन देश के जवानों को सम्मान देने और नागरिकों में सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से किया गया।

दुर्ग नगर निगम द्वारा शनिवार को शहीद चौक से पटेल चौक तक भव्य तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा में संयुक्त कलेक्टर श्री हरवंश मिरी, नगर निगम अधिकारी श्री सुमित अग्रवाल, महापौर श्रीमती अलका बाघमार, पूर्व मंत्री श्रीमती रमशीला साहू सहित स्कूली छात्र, एनसीसी कैडेट्स, सामाजिक संगठनों के प्रतिनिधि, स्थानीय जनप्रतिनिधि एवं बड़ी संख्या में आम नागरिक शामिल हुए। सभी ने हाथों में तिरंगा लिए देशभक्ति के नारों के साथ एकता और समर्पण का संदेश दिया। यात्रा मार्ग पर देशभक्ति गीतों और नारों से वातावरण गूंजता रहा।

नगर निगम रिसाली में निकली भव्य तिरंगा यात्रा

इसी कड़ी में नगर पालिक निगम रिसाली द्वारा दशहरा मैदान, सेक्टर-6 से आजाद चौक तक तिरंगा यात्रा निकाली गई। यात्रा का नेतृत्व दुर्ग ग्रामीण विधायक श्री ललित चंद्राकर, महापौर श्रीमती शशि सिन्हा तथा सभापति श्री केशव बंछोर ने किया। इस अवसर पर निगम आयुक्त श्रीमती मोनिका वर्मा, महापौर परिषद के सदस्य, पार्षदगण, नगर के गणमान्य नागरिक, सफ़ाई कर्मचारी, स्व-सहायता समूह की महिलाएं, स्वयंसेवी संगठन और अधिकारी-कर्मचारी बड़ी संख्या में शामिल हुए। तिरंगा यात्रा का समापन शहीद रजनीकांत स्मारक पर पुष्पांजलि अर्पित कर किया गया। करीब 700 से अधिक नागरिकों की भागीदारी ने इस आयोजन को एक जन आंदोलन का रूप दे दिया।

अहिवारा में ऑपरेशन सिंदूर को मिला समर्थन

अहिवारा नगर पालिका द्वारा ऑपरेशन सिंदूर के समर्थन में भी एक जागरूकता रैली का आयोजन किया गया, जिसमें महिलाओं, आमजन एवं जनप्रतिनिधियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। रैली के माध्यम से भारतीय सैनिकों के साहसिक प्रयासों को समर्थन और भारत सरकार को साधुवाद प्रकट किया गया।

इसी प्रकार नगर पंचायत पाटन, उतई द्वारा भारतीय सेना की शौर्य पूर्ण विजय पर तिरंगा यात्रा नगर पंचायत कार्यालय के मुख्य बाजार होत हुए गायत्री मंदिर तक निकाला गया, जिसमें नगर पंचायत के अध्यक्ष, पार्षदगण, गणमान्य नागरिक स्व सहायता की महिला सदस्य तथा अधिकारी-कर्मचारी शामिल हुए। साथ ही नगर निगम भिलाई-चरौदा, जनपद पंचायत धमधा, नगर पंचायत कुम्हारी, नगर पंचायत जामुल, नगर पंचायत व ग्राम पंचायत बोरई, निकुम, अछोटी, बोरीगारका, जनपद पंचायत तेलीगुण्डरा में तिरंगा यात्रा निकाली गई।

आपरेशन सिंदूर के अंतर्गत बसना मे तिरंगा यात्रा

बसना(समय दर्शन)। आपरेशन सिंदूर अंतर्गत बसना में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन हुआ। इस दौरान हाई स्कूल बसना से बस स्टैंड तक आज 'आपरेशन सिंदूर' के तहत भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। इस गौरवपूर्ण कार्यक्रम में महासमुंद सांसद रूपकुमारी चौधरी,बसना विधानसभा संयोजक एवं बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ के प्रदेश सदस्य डॉक्टर एन.के.अग्रवाल,रामचंद्र अग्रवाल, नगर पंचायत अध्यक्ष डॉ.खुशबू अग्रवाल, नगर पंचायत उपाध्यक्ष शीत गुप्ता , जिला उपाध्यक्ष रमेश अग्रवाल, डां.गजानंद अग्रवाल, डॉ अरुणा अग्रवाल, एस डी एम मनोज खाण्डे,बसना नगर पंचायत सी एम ओ सूरज सिदार,विधायक प्रतिनिधि खोलबाहरा निराला, बसना थाना प्रभारी नरेन्द्र राठौर की उपस्थिति में देशभक्ति से ओतप्रोत वातावरण देखने को मिला।

तिरंगा यात्रा में मुख्य नगर पालिका अधिकारी सूरज सिदार एवं पार्षदगण शामिल हुए। यात्रा का शुभारंभ हाई स्कूल बसना से हुआ और यह शहर के प्रमुख चौक, चौराहों तथा गलियों से होते हुए आगे बढ़ी। इस रैली में स्काउट-गाइड के बच्चे, विभिन्न स्कूलों के छात्र-छात्राएँ, स्थानीय जनप्रतिनिधियों और ग्रामीणों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। सभी प्रतिभागियों के हाथों में तिरंगा लहराते हुए, देशप्रेम नारों और देशभक्ति गीतों के साथ वातावरण को राष्ट्रीय एकता की भावना से भर दिया।

रैली के दौरान सभी ने अनुशासित एवं उत्साहपूर्ण ढंग से हिस्सा लिया। लोगों के चेहरों पर देशप्रेम के प्रति जज्बा ,समर्पण और गर्व का भाव स्पष्ट रूप देखा जा सकता था। अनुविभागीय अधिकारी मनोज कुमार खांडे ने कहा कि कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं और नागरिकों में देशभक्ति की भावना को प्रोत्साहित करना और राष्ट्रीय एकता को मजबूत करना है। नागरिकों ने इस आयोजन की सराहना करते हुए कहा कि सिरपुर जैसी ऐतिहासिक नगरी में इस प्रकार के आयोजन से युवाओं को अपने सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत से जुड़ने का अवसर मिलता है। कार्यक्रम का समापन राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए सभी नागरिक एकजुट हुए। जिसमें सभी गणमान्य जन उपस्थित जनों ने एक स्वर में भारत माता की जय घोष,वंदे मातरम के साथ भाग लिया।

जिले के नव पदस्थ पुलिस अधीक्षक जांजगीर चांपा विजय कुमार पाण्डे ने किया पदभार ग्रहण

कार्यभार ग्रहण करने पश्चात जिले में बेहतर पुलिसिंग व्यवस्था करने हेतु निर्देशित किया गया

जांजगीर चांपा (समय दर्शन)। पत्रकारवार्ता के दौरान सभी पत्रकारों से परिचय लिया जाकर पुलिस अधीक्षक द्वारा विगत दिनों बस्तर क्षेत्र में चलाए गए नक्सल आपरेशन के संबंध अपना अनुभव साझा किया गया।

नव पदस्थ पुलिस अधीक्षक जांजगीर चांपा विजय कुमार पाण्डे ने पुलिस अधीक्षक कार्यालय जांजगीर पहुँचकर पदभार ग्रहण किया। पदभार ग्रहण करने के बाद उन्होंने उपस्थित अधिकारी-कर्मचारियों से परिचय प्राप्त किया एवं कानून सुरक्षा व्यवस्था के संबंध में चर्चा करते हुए जिले में बेहतर पुलिसिंग व्यवस्था करने निर्देशित किया गया, तथा पुलिस अधीक्षक द्वारा पदभार ग्रहण करने पश्चात पुलिस अधीक्षक कार्यालय सभा कक्ष में पत्रकार्ता भी लिया जाकर अपना अनुभव साझा किया। नव पदस्थ पुलिस अधीक्षक महोदय इसके पूर्व स्ञ्जस्न बघेरा में पदस्थ थे जो वर्ष 2000 बैच के डायरेक्ट ष्ठस्क है। रायपुर जिला में परिवेक्षाधीन अवधि के पश्चात स्ष्ठह्रक्क बेमेतरा, स्ष्ठह्रक्क किरंदुल, ष्टस्क राजनांदगांव,्रस्क बिलासपुर, कोरबा तथा जगदलपुर, दुर्ग स्क्ररेडियों में पदस्थ रह चुके हैं। इस अवसर पर वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री विवेक शुक्ला, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री उमेश कुमार कश्यप, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात श्री उदयन बेहार, ष्ठस्क अजाक श्री जितेंद्र खूंटे, ष्ठस्क श्रीमती कविता ठाकुर, स्ष्ठह्रक्क चाम्पा श्री यदुमणि सिदार, स्ष्ठह्रक्क जांजगीर श्री प्रदीप कुमार सोरी, ष्ठस्क मुख्यालय श्री विजय पैकरा, रक्षित निरीक्षक प्रदीप कुमार जोशी, स्टेनो राजेंद्र श्रीवास्तव,्रस्ढ्ढ अश्वनी राठौर रीडर -1 सहित पुलिस कार्यालय में पदस्थ अधि./ कर्मचारीगण उपस्थित रहे।

ग्राम चर्रा में अवैध रुप से शराब बेचने वाली आरोपिया के विरुद्ध की गई वैधानिक कार्यवाही

धमतरी (समय दर्शन)। धमतरी पुलिस थाना कुरूद को मुखबिर के सूचना मिली की ग्राम चर्रा पारधी पारा में नंदनी सिसोदिया अपने घर में अवैध रूप से शराब रखकर बिक्री कर रही हैं की सूचना के आधार पर शराब रेड कार्यवाही कर आरोपिया नंदनी सिसोदिया पति शिव सिसोदिया उम्र 32 वर्ष निवासी चर्रा,थाना कुरूद की महिला आरक्षक रिंकी मंडावी द्वारा घर की तलाशी लिये जाने पर आरोपिया के कब्जे से एक थैले में 30 पौवा देशी प्लेन शराब एवं 10 पौवा देशी मशाला कुल 42 पौवा शराब प्रत्येक में 180-180 एम0एल0 कुल 7.560 बाल्क लीटर किमती 3460/- रूपये को जप्त कर आरोपिया के विरूद्ध थाना कुरूद में अप0 क्र0 125/25 धारा 34 (2) आबकारी एक्ट के तहत वैधानिक कार्यवाही कर आरोपिया को न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

सुशासन तिहार के अंतर्गत लगाया गया समाधान शिविर

दंतेवाड़ा किरंदुल (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ शासन एवं मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय के मंशानुरूप प्रदेश व्यापी सुशासन तिहार 2025 अंतर्गत प्रथम चरण में प्राप्त हुए आवेदनों का गुणवत्तापूर्ण निराकरण किया जा रहा हैं।इस तिहार का उद्देश्य आम जनता की समस्याओं का समयबद्ध समाधान, शासकीय योजनाओं की समीक्षा और निगरानी,विकास कार्यों में तेजी लाना, और जनता, जनप्रतिनिधियों व सामाजिक संगठनों के साथ सीधा संवाद स्थापित करना हैं। आवेदन समाधान पेटी, शिविर और ऑनलाईन पोर्टल के माध्यम से लिए गए हैं।सुशासन तिहार के अंतर्गत किरन्दुल में प्राप्त आवेदन का निराकरण समाधान शिविर का आयोजन आंगनबाड़ी केंद्र वार्ड क्रमांक 11 में वार्ड क्रमांक 09 एवं 11 हेतु आयोजित किया गया।तथा इन दोनों से प्राप्त आवेदनों हेतु समाधान शिविर में कुल 89 आवेदनों में 87 आवेदनों का निराकरण किया गया।तथा नया आवेदन लिया गया है इस अवसर ,पार्षद लीना सोनी, थॉमस बाबू दुर्गम, बी रूपा रानी,यशोदा चुन्नम, सहायक राजस्व निरीक्षक गौरीशंकर तिवारी,मनराखन ठाकुर, फूड इंस्पेक्टर नरेंद्र सिंह ठाकुर ,प्रभाती दास एम टी, जे ई सी एस ई बी गौरव देवांगन पटवारी बृजलाल ताती, सब इंस्पेक्टर,अमर कुमार यादव, थविंद्र नाग,सुलधर नाग,सुपरवाइजर शांति मिडियामी ,चंद्रिका नाग मेडिकल ऑफिसर उप स्वास्थ्य केन्द्र आंगनबाड़ी कार्यकर्ता, मितानिन,राजस्व विभाग, स्वास्थ्य,खाद्य विभाग, चिप्स विभाग, श्रम विभाग,उपस्थित थे।

बिना तैयारी के पहुंचे बैठक में अधिकारी, बैठक से रहे नदारत कई अधिकारी, सदस्यों ने जताई नाराजगी

छुईखदान (समय दर्शन)। जनपद पंचायत छुईखदान की चुनाव के बाद पहली सामान्य सभा बैठक में उस समय हैरानी और नाराजगी का माहौल बन गया, जब कई विभागों के अधिकारी अनुपस्थित पाए गए और जो अधिकारी उपस्थित थे, वे भी अपने विभागीय कार्यों की समुचित जानकारी देने में असमर्थ नजर आए।

बैठक की अध्यक्षता जनपद अध्यक्ष श्रीमती पुष्पा प्रकाश जंघेल ने की। साथ ही सीईओ रवि कुमार, सभी सभापति और जनपद सदस्य मौजूद रहे। बैठक में पेयजल संकट, प्रधानमंत्री आवास योजना, मनरेगा, महिला बाल विकास, सहकारिता विभाग और कार्यालय में अनाधिकृत रूप से कार्यरत ऑपरेटर जैसे गंभीर मुद्दे उठाए गए।

पेयजल संकट पर चर्चा

जनपद सभापति डोमार सिंह सहित आधा दर्जन से अधिक जनपद सदस्य ने पेयजल संकट का मुद्दा उठाया, तो जवाब देने के लिए पीएचई विभाग का कोई भी अधिकारी बैठक में उपस्थित नहीं था, जिससे सवालों का कोई जवाब नहीं मिल पाया और सदस्यों ने इस गैरजिम्मेदाराना रवैय्ये की कड़ी निंदा करते हुए संबंधित अधिकारियों के विरुद्ध कार्रवाई की मांग की।

आवास हितग्राहियों के मजदूरी राशि के मस्टररोल में गडबड़ी

सभापति सुधीर गोलछा ने प्रधानमंत्री आवास योजना के अंतर्गत निर्माण कार्य पूर्ण कर चुके हितग्राहियों के मस्टररोल नहीं बनने और मजदूरी भुगतान में हो रही देरी पर सवाल खड़े किए। उन्होंने पूछा कि निर्माण कार्य के दौरान ही हितग्राहियों को 90 मानव दिवस की मजदूरी देनी होती है, वो क्यों नहीं दिया गया है। इस पर मनरेगा परियोजना अधिकारी सिद्धार्थ जयसवाल ने कहा कि अभी मस्टररोल जारी कर देंगे। इस पर सभापति श्री गोलछा ने प्रतिप्रश्न करते हुए कहा कि कार्य पूर्ण (मकान पूर्ण) हो जाने के बाद मस्टर रोल कैसे बना सकते हैं? परियोजना अधिकारी सिद्धार्थ जयसवाल इस पर कोई स्पष्ट उत्तर नहीं दे सके और एक सप्ताह के भीतर सभी हितग्राहियों के मस्टर रोल बनाने का आश्वासन दिया।

महिला बाल विकास विभाग के अधिकारी भी रहे नदारत

महिला बाल विकास विभाग की सभापति श्रीमती ज्योति जंघेल ने बिना सूचना के परियोजना अधिकारी की अनुपस्थिति पर कड़ी नाराजगी जताते हुए उच्च कार्यालय को पत्र लिखकर शिकायत करने की बात कही। जनपद सदस्य रमेश साहू ने सहकारिता विभाग के अधिकारियों की अनुपस्थिति का मुद्दा उठाया और समिति प्रबंधकों की नियुक्ति के समय की शैक्षणिक योग्यता संबंधी दस्तावेजों की मांग रखी। बैठक में यह गंभीर मामला भी सामने आया कि जनपद कार्यालय में चार ऑपरेटर अनाधिकृत रूप से कार्यरत हैं, जिस पर सीईओ रवि कुमार ने जांच कराने की बात कहकर टालने की कोशिश की, लेकिन सदस्यों ने जनपद में कार्यरत सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों के नाम और पदनाम की सूची सार्वजनिक करने की मांग रख दी। सदस्यों ने कहा कि जनपद कार्यालय में 4 ऐसे ऑपरेटर कार्य कर रहे हैं, जिनकी नियुक्ति नहीं हुआ है, किन्तु वे चारों ऑफिस के कंप्युटर पर काम करते हैं और ग्राम पंचायतों के 15 वित्त के बिलों का भुगतान करते हैं, जिसमें हाल ही मे लाखों रुपये के फर्जी भुगतान का भी मामला सामने आया था। साथ यह भी बात सामने आई कि ये ऑपरेटर फर्जी फर्म बनाकर उसके जीएसटी बिल बनाकर रुपये के भुगतान भी कर रहे हैं स

राशनकार्ड बनाने के नाम पर अवैध वसूली का मामला

सदस्य दुष्यंत जंघेल ने फर्जी राशन कार्ड बनाए जाने और राशन कार्ड बनवाने के नाम पर हो रही अवैध वसूली का मामला उठाया, जिससे सदन का माहौल कुछ समय के लिए गर्मा गया। सभी सदस्यों ने इस पर नाराजगी जाहिर करते हुए कहा कि अधिकारी के आईडी पासवर्ड उनके ऑफिस के ऑपरेटर दुरुपयोग करते हैं। तमाम मुद्दों ने जनपद प्रशासन की कार्यशैली पर सवालिया निशान खड़े कर दिए और यह बैठक, जहां विकास की योजनाओं पर सकारात्मक संवाद होना था, अधिकारियों की लापरवाही और जवाबदेही की कमी के चलते असंतोष और आक्रोश का केंद्र बन गई। बैठक में विधायक प्रतिनिधि विनोद ताम्रकार, सभापति डोमार सिंह, सुधीर गोलछा, मन्नू मरकाम, ज्योति जंघेल, हिमेश्वरी वैष्णव, काशी राम पोर्टे, दुष्यंत जंघेल, रमेश साहू, रीना यदु, रिखि राम, कुसुम बाई उपस्थित रहीं।

सिहाद में समाधान शिविरः साढ़े 4 हजार से अधिक आवेदनों का निराकरण

धमतरी (समय दर्शन)। कुरूद विकासखण्ड के सिहाद में समाधान शिविर का आयोजन हुआ। इस दौरान सुशासन तिहार में मिले मांग, शिकायत और समस्या संबंधी कुलं 4 हजार 899 आवेदनों की जानकारी दी गई। इनमें से से 4 हजार 752 आवेदन मांग और 147 आवेदन शिकायत से संबंधित थे। प्राप्त आवेदनों में से 4 हजार 861 मांग संबंधी आवेदन और 145 शिकायत संबंधी आवेदनों का निराकरण कर लिया गया है। समाधान शिविर में 39 हितग्राहियों को शासकीय योजनाओं से लाभान्वित भी किया गया।

सिहाद में आयोजित समाधान शिविर में विभागीय स्टाल भी लगाए गए थे, जिनका उपस्थित जनप्रतिनिधियों द्वारा निरीक्षण किया गया तथा विभागवार प्राप्त मांग-शिकायतों के निराकरण के संबंध में जानकारी ली गई। ग्रामीणों को पीएम आवास योजना, महतारी वंदन योजना, आयुष्मान योजना, श्रम विभाग की योजनाओं से लेकर राशन कार्ड, सामाजिक सुरक्षा पेंशन सहित शासन की अन्य महत्वपूर्ण योजनाओं-कार्यक्रमों की जानकारी दी गयी। शिविर में छग अन्य पिछड़ा वर्ग आयोग के अध्यक्ष श्री नेहरू निषाद, सभापति जिला पंचायत सदस्य श्रीमती पूजा राजू सिन्हा, जनपद पंचायत कुरूद अध्यक्ष श्रीमती गीतेश्वरी हेमन्त साहू, जनपद सदस्य श्री एवन साहू एवं श्री रामगोपाल देवांगन, पूर्व अध्यक्ष जनपद पंचायत कुरूद उपस्थित थे।

ग्राम नयापारा मे हुआ विहिप बजरंगदल की नवीन कार्यकारिणी का गठन,युवाओं ने लिया गौसेवा का संकल्प

बलौदाबाजार (समय दर्शन)। जिला बलौदाबाजार भाटापारा के डमरू खंड के ग्राम नयापारा मे विश्व हिंदू परिषद बजरंगदल की नवीन कार्यकारिणी का गठन हनुमान मंदिर में पूजा अर्चना के साथ संपन्न हुआ जिसमेँ मुख्य वक्ता विहिप जिला अध्यक्ष अभिषेक तिवारी ने युवाओं को संबोधित करते हुए संगठन की कार्यप्रणाली के संबंध में विस्तार से बताया और युवाओं को किसी भी तरह के दुर्व्यसन एवं दुराचरण का त्याग कर हिंदू समाज के हित में एकजुट होकर कार्य करने मंदिरों सार्वजनिक स्थलों गौशालाओं की साफसफाई के साथ प्रत्येक मंगलवार एवं शनिवार हनुमान चालीसा का पाठ करने बैठक कर कार्य योजना बनाने तथा सभी सनातनी तीज त्यौहार के

साथ सामाजिक धार्मिक अनुष्ठान मे ग्रामीणों का सहयोग करने का संदेश दिया। ग्राम नयापारा निवासी राजेंद्र जायसवाल पूर्व सरपंच को डमरू विहिप खंड अध्यक्ष एवं आदित्य कुमार यदु को बजरंगदल खंड संयोजक का दायित्व सौंपा गया साथ ही ग्राम नयापारा के आनंद साहू ग्राम अध्यक्ष सालिक राम पाल उपाध्यक्ष महेश पाल मंत्री भुवनेश्वर यादव सहमंत्री योगेश साहू सत्संग प्रमुख गोविंद गिरी गोस्वामी बजरंगदल ग्राम संयोजक यंगम साहू सहसंयोजक रंजीत साहू साप्ताहिक मिलन प्रमुख मुकेश पाल गौरक्षा प्रमुख राम अवतार यादव अखाड़ा प्रमुख सर्वसम्मति से नियुक्त किए गए।

बैठक में बलौदाबाजार से जिला अखाड़ा प्रमुख रवि यादव नगर संयोजक दिनेश यादव विहिप नगर आयुष बरनवाल ग्राम नयापारा से मेघनाथ सेन थानेश्वर देवदास दीपक पाल दीपक रजक मनीष पाल अनिल कुमार प्रकाश पाल कृष्ण कुमार साहू नवीन पटेल ओमप्रकाश धरम निषाद कमलेश्वर गिरी गोस्वामी टिकेश्वर पटेल मोहन पाल दिपेश पाल इत्यादि युवाओं ने संगठन से जुड़कर हिंदू समाज गांव गौवंश एवं राष्ट्र सेवा का संकल्प लिया।

तृतीय कूडो नेशनल चैंपियनशिप कप में महासमुंद जिले के 3 खिलाड़ी करेंगे छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व

महासमुंद(समय दर्शन)। महासमुंद जिले के 3 खिलाड़ी राष्ट्रीय कूडो चैंपियनशिप कप चयन हुआ है, जो 16 से 21 मई तक आयोजित होने वाली तृतीय राष्ट्रीय कूड़ो चैंपियनशिप कप पुणे बॉयज मिलिट्री स्कूल पुलगांव में, महासमुंद जिला से महिला वर्ग 240 में मीरा पंडा पुरुष वर्ग में 260 में उपेंद्र प्रधान 240 वर्ग में राकेश साहू छत्तीसगढ़ का प्रतिनिधित्व करते हुए मेडल के लिए दावेदारी करेंगे ।

छत्तीसगढ़ से 62 खिलाड़ियों ने इस राष्ट्रीय स्पर्धा में भाग लिया है। छत्तीसगढ़ कूड़ो एसोसिएशन के अध्यक्ष एवं कोच रहे सचिव मनीष साहू ने खिलाड़ियों को अग्रिम बधाई दिए।

महासमुंद के जिला खेल अधिकारी मनोज कुमार घृतलहरे खेल एवं युवा कल्याण महासमुंद ने खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा महासमुंद जिले में निरंतर कूड़ो खेल मै खिलाड़ी राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिनिधित्व कर राज्य को मेडल दिलाने का कार्य कर रहे है एवं महासमुंद जिले का नाम रौशन कर रहे एवं इस खेल में खिलाड़ियों को दक्ष बनाने के लिए जिला प्रशासन एवं खेल एवं युवा कल्याण महासमुंद द्वारा भी समय समय पर प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जाता है और उसका लाभ खिलाड़ियों को मिल रहा है । सभी चयनित खिलाड़ियों को अग्रिम शुभकामनाएं देते हुए यह जानकारी दिए कि यह खेल भारत सरकार से मान्यता प्राप्त खेल है साथ ही,खेल एवं युवा कल्याण विभाग छत्तीसगढ़ शासन मै भी शामिल खेल है जिससे राज्य सरकार भी विजेता खिलाड़ियों को नगद राशि से सम्मानित करती है । निश्चित ही आने वाले समय में खिलाड़ियों का भविष्य सुनहरा है खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने के लिए खेल एवं युवा कल्याण महासमुंद हर संभव प्रयास करेगा यह कहते हुए खिलाड़ियों की उज्ज्वल भविष्य की कामना किए।

बलौदा बाज़ार की बेटियों का परचम, संस्कृत बोर्ड परीक्षा में शानदार प्रदर्शन

टॉप-10 में जिले की पाँच छात्राएँ शामिल 7 सर्वा कटगी के राष्ट्रीय आदर्श प्राच्य संस्कृत विद्यालय का दबदबा

बलौदाबाजार (समय दर्शन)। छत्तीसगढ़ संस्कृत विद्या मंडलम् की बोर्ड परीक्षाओं का परिणाम शुक्रवार को घोषित कर दिया गया। यह परिणाम कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों के लिए जारी किए गए। मंडलम् के सचिव राजेश पांडे ने यह परीक्षा परिणाम सार्वजनिक किया। जारी आंकड़ों के अनुसार, उत्तर मध्यमा द्वितीय वर्ष (12वीं) का परीक्षा परिणाम 71.01 प्रतिशत और पूर्व मध्यमा द्वितीय वर्ष (10वीं) का परिणाम 53.49 प्रतिशत रहा। 12वीं कक्षा में बलौदाबाज़ार जिले की प्रिंसी मधुकर ने टॉप किया है। उन्होंने विज्ञान संकाय में 612 अंक (87.43त्न) हासिल किए।

विशेष बात यह रही कि टॉप-10 की सूची में बलौदाबाजार जिले की पाँच छात्राएँ शामिल हैं और ये सभी छात्राएँ कसडोल विकासखंड के राष्ट्रीय आदर्श प्राच्य संस्कृत उत्तर माध्यमिक विद्यालय, सर्वा कटगी की हैं। टॉप-10 में शामिल इन पाँचों छात्राओं की आपसी गहरी मित्रता भी चर्चा का विषय बनी हुई है। यह उपलब्धि न केवल विद्यालय बल्कि पूरे जिले के लिए गर्व की बात है।

टॉपर्स की सूची:

1. प्रिंसी मधुकर, पिता - राजकुमार मधुकर (शासकीय आयुर्वेद औषधालय कर्मचारी), विज्ञान संकाय, 612 अंक (87.43 प्रतिशत) प्रथम स्थान
2. आंचल कर्ष, पिता - सत्यनारायण कर्ष, विज्ञान संकाय, 597 अंक (85.29 प्रतिशत) द्वितीय स्थान
3. दुर्गेश्वरी ध्रुव, पिता - स्व. जगदीश ध्रुव, अंक - 583(83.29 प्रतिशत) तृतीय स्थान
4. यामिनी कुर्रे, पिता - नंद कुमार, 545 अंक (77.86 प्रतिशत) - छठवाँ स्थान
5. मनिषा, पिता - मुरली, 532 अंक (76 प्रतिशत) - आठवाँ स्थान

छात्राओं की प्रेरणादायक बातें

प्रिंसी मधुकर ने बताया, मेरे पिताजी सरकारी सेवा में हैं, जिससे मुझे पढ़ाई के लिए अनुकूल वातावरण मिला। मैं उनके मार्गदर्शन और ट्यूशन क्लास से मिली मदद के कारण यह सफलता प्राप्त कर सकी। आगे मैं बीएससी नर्सिंग करना चाहती हूँ, और यदि वह संभव न हो पाया तो डी.एल.एड. कर शिक्षिका बनने का सपना भी है। आंचल कर्ष ने बताया, मैं एक साधारण कृषक परिवार से हूँ। मेरी बड़ी बहन ने मुझे प्रेरित किया। अब मैं डीएलएड कर शिक्षिका बनना चाहती हूँ। मैं चाहती हूँ कि संस्कृत भाषा को संरक्षित रखने की दिशा में सभी छात्र-छात्राएं प्रयास करें। दुर्गेश्वरी ध्रुव ने भावुक होकर कहा, मेरे पिताजी नहीं हैं। माँ और भाई प्रवासी मजदूर हैं। खेतों में काम और घरेलू ज़िम्मेदारियों के बीच पढ़ाई करना आसान नहीं था, लेकिन मैंने हार नहीं मानी। मैं चाहती हूँ कि सरकार ऐसे निर्धन बच्चों की सहायता करे ताकि गरीबी उनके भविष्य की राह में बाधा न बने।

विद्यालय और संस्कृत भाषा पर प्राचार्य की टिप्पणी

विद्यालय के प्राचार्य डॉ. डी. के. महीपाल ने छात्रों की इस सफलता पर प्रसन्नता जाहिर करते हुए कहा, हमारे विद्यार्थियों ने इस वर्ष भी छत्तीसगढ़ संस्कृत बोर्ड में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर विद्यालय और जिले का नाम रोशन किया है।

संस्कृत भाषा की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा, संस्कृत केवल भाषा नहीं, हमारी सांस्कृतिक आत्मा की पहचान है। शासन-प्रशासन को चाहिए कि प्रत्येक विकासखंड में एक संस्कृत विद्यालय और प्रत्येक जिले में एक संस्कृत महाविद्यालय की स्थापना की जाए, ताकि इस गौरवशाली भाषा को संरक्षित और संवर्धित किया जा सके।

कार्यालय से ज्यादा फील्ड में समय बिताएं अधिकारी, गुणवत्ता के साथ समय-सीमा में पूर्ण करें निर्माण कार्य: महापौर

दुर्ग (समय दर्शन)। महापौर श्रीमती अल्का बाघमार द्वारा लोक कर्म प्रभारी देवनारायण चन्द्राकर के साथ अधिकारियों एवं ठेकेदारों की बैठक लेकर शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन एवं विकास कार्यों में प्रगति की समीक्षा की।महापौर श्रीमती बाघमार ने अधिकारियों वार्ड-वार कार्यों की प्रगति की समीक्षा की।

उन्होंने निर्माण कार्यों की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए निर्माणाधीन कार्यों में तेजी लाकर समय-सीमा में पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि अधिकारी ठेकेदारों के भरोसे न रहकर स्वयं फील्ड का दौरा करें और कार्यों की प्रगति देखें।उन्होंने शासकीय काम-काज में आने वाली समस्याओं के त्वरित निराकरण पर जोर दिया।

बैठक में कार्यपालन अभियंता दिनेश नेताम,वीपी मिश्रा,राजकुमार,संजय ठाकुर,भवन अधिकारी गिरीश दीवान,विनोद मांझी,अपर्णा मिश्रा,प्रेरणा दुबे,करण यादव सहित अधिकारी/ निगम के समस्त ठेकेदार मौजूद रहें।

उन्होंने निर्माण कार्यों को समय पर पूरा करने और गुणवत्ता का विशेष ध्यान रखने की हिदायत दी। प्रभारी देवनारायण चन्द्राकर ने कहा अधिकारीगण,पटवारियों के साथ टीम बनाकर शहर क्षेत्र अंतर्गत जितने भी शासकीय भूमि है उन्हें चिन्हाकिंत करने के निर्देश दिए।

महापौर ने कहा कि शहर क्षेत्र में हो रहे निर्माण कार्यों में लेटलतीफी पर कार्यपालन अभियंता और सहायक अभियंता द्वारा ठेकेदार के साथ बैठक में कहा शहर में निर्माण कार्य पर जोर दिया गया साथ ही विधायकनिधि,सांसदनिधि,महापौर निधि,पार्षद निधि,15वे वित्त मद सहित अन्य नालीनिर्माण,सार्वजनिक भवन सहित अन्य सामाजिक भवन ,मुक्तिधाम निर्माण,गार्डन, डामरीकरण, सीसी सड़क, पेवर ब्लाक,सड़क चौड़ीकरण एवं उन्नयन कार्य, सार्वजनिक शौचालय के साथ अन्य मदों से शुरू होने वाले कार्यों के बारे में अधिकारियों से जानकारी लिए।जन संपर्क/राज बक्शी

ग्राम चीजगांव में निकाली गई तिरंगा यात्रा

साजा (समय दर्शन)। राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक अभियान के अंतर्गत 17 मई को प्रदेश भर के प्रत्येक गांव,नगर और पंचायत में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। ग्राम चीजगांव,बरगा, हाटरांका समेत विभिन्न ग्राम पंचायत में तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। यह यात्रा देश देश की सुरक्षा में नागरिक सहभागिता के संकल्प के साथ आयोजित की गई। जिसमें जनप्रतिनिधियों से लेकर आम नागरिकों तक की भागीदारी सुनिश्चित रही। यात्रा की अगुवाई राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए नागरिक शीर्षक वाले बैनर से की गई। इसके साथ आपरेशन सिंदूर का अधिकृत लोगों तक प्रमुख रूप से प्रदर्शित किया गया। यात्रा का प्रमुख आकर्षण आपरेशन सिंदूर के साथ राष्ट्र ' जैसे बड़े बैनर हुए, जो जो नागरिकों के मन में राष्ट्रभक्ति की भावना को जागृत किया। इस अवसर पर देश की सशस्त्र सेनाओं , अर्धसैनिक बलों के योगदान को सराहते हुए भारत की जीत, सशस्त्रबलों तथा सैनिकों और उनके परिवारों को धन्यवाद के संदेश वाली तख्तियां लोगों के हाथ रही।

इस दौरान ग्राम पंचायत चीजगांव सरपंच भगेला साहू, उपसरपंच सुनील साहू, पंचगण डेरहा साहू,अकरूल साहू, भुवनेश्वरी साहू,परमिला बाई रोजगार सहायिका रेखा मार्कंडेय, भारतीय जनता पार्टी थानखम्हरिया मंडल अध्यक्ष केशव पटेल, कोटवार पुरुषोत्तम दास, भूतपूर्व सरपंच अजय वर्मा,आर एस एस पदाधिकारी ओमपाल,गणेश वर्मा, सेवाराम साहू, चुरावन वर्मा,ओंकार साहू, सियाराम नेताम,दिनेश्वर साहू,धीरऊ यादव,अटल साहू,डोमार साहू,चीजगांव एवं पलेनी आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं सहायिका अम्बे मरकाम इंद्रावर्मा समेत बड़ी संख्या में पुरुष, महिलाएं एवं बच्चे तिरंगा यात्रा में शामिल रहे।

देशभक्तिपूर्ण वातावरण से सराबोर रहा जिले के विभिन्न स्थानों में आयोजित तिरंगा यात्रा

हाथ में तिरंगा लेकर भारत माता की जय की गगन स्पर्शी नारे लगाते हुए जनप्रतिनिधियों, अधिकारी-कर्मचारियों और आम नागरिकों ने किया नगर एवं गांव का भ्रमण

बालोद (समय दर्शन)। हमारे देश के वीर सैनिकों के द्वारा 'ऑपरेशन सिंदूर' के माध्यम से आतंकवादियों एवं देश के दुश्मनों को मुँहतोड़ जवाब देने तथा हमारे वीर सैनिकों के अदम्य वीरता एवं साहस के सम्मान में पूरे देश की भाँति बालोद जिले के विभिन्न स्थानों में भी भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। जिला मुख्यालय बालोद सहित जिले के सभी नगरीय निकायों, ग्राम पंचायतों एवं विभिन्न स्थानों में आयोजित भव्य तिरंगा यात्रा देशभक्तिपूर्ण वातावरण से सराबोर रहा। जिले के विभिन्न स्थानों में आयोजित तिरंगा यात्रा में वरिष्ठ जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी, भूतपूर्व सैनिक, समाज के गणमान्य एवं प्रबुद्धजन, पत्रकार, समाजसेवियों, महिलाओं, युवाओं सहित समाज के सभी वर्ग के लोगों ने कार्यक्रम में अपनी सक्रिय सहभागिता सुनिश्चित करते हुए राष्ट्र के प्रति अपनत्व एवं प्रेम को प्रदर्शित किया। इस दौरान कार्यक्रम में उपस्थित जनप्रतिनिधियों, अधिकारी-कर्मचारियों तथा समाज के सभी वर्गों के लोगों ने हाथ में तिरंगा लेकर तथा भारत माता की जय की गगन स्पर्शी नारे लगाते हुए शहर एवं ग्रामों का भ्रमण किया। इस अवसर पर आम नागरिकों के द्वारा विभिन्न स्थानों में तिरंगा यात्रा में शामिल लोगों के ऊपर पुष्प वर्षा कर उनका स्वागत किया। जिला मुख्यालय बालोद में आयोजित तिरंगा यात्रा में नगर पालिका अध्यक्ष श्रीमती प्रतिभा चैधरी, उपाध्यक्ष श्री कमलेश सोनी, राष्ट्रीय बाल संरक्षण आयोग के पूर्व सदस्य श्री यशवंत जैन, पूर्व नगर पालिका अध्यक्ष श्री यज्ञदत्त शर्मा एवं श्रीमती लीला शर्मा सहित वरिष्ठ जनप्रतिनिधि श्री चेमन देशमुख, श्री पवन साहू, श्री केसी पवार, सहित एसडीएम श्री सुरेश साहू, तहसीलदार श्री आशुतोष शर्मा, नायब तहसीलदार श्री मुकेश गजेन्द्र, मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री सौरभ शर्मा सहित बड़ी संख्या में महिलाओं एवं युवाओं तथा आम नागरिकगण उपस्थित थे।

जिला मुख्यालय बालोद में इस भव्य तिरंगा यात्रा की शुरूआत सरदार वल्लभ भाई पटेल मैदान से करते हुए घड़ी चैक, पुराना बस स्टैण्ड, सदर रोड, रामदेव चैक, मधु चैक, जय स्तंभ चैक से वापस सरदार पटेल मैदान में तिरंगा रैली का समापन किया गया। जिला मुख्यालय बालोद के अलावा जिले के सभी नगरीय निकायों एवं ग्राम पंचायतों में भी तिरंगा यात्रा निकाली गई। इसके अंतर्गत नगर पालिका परिषद दल्लीराजहरा, नगर पंचायत डौण्डीलोहारा, अर्जुंदा, गुण्डरदेही सहित जिले के सभी नगर निकायों एवं ग्राम पंचायतों में भी तिरंगा यात्रा निकालकर हमारे वीर सैनिकों के अदम्य साहस एवं वीरता का सम्मान किया गया। इसके अलावा समाज के सभी वर्ग के लोगों ने इस तिरंगा यात्रा में शामिल होकर देश के एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने तथा संकटकाल एवं देश के ऊपर किसी भी प्रकार की विपत्ति तथा बाहरी आक्रमण होने की स्थिति में देश के शत्रुओं को मुँहतोड़ जवाब देने हेतु पूरे देश के प्रत्येक नागरिकों का एकता के सूत्र में आबद्ध होने का संदेश भी दिया गया। उल्लेखनीय है कि नगर पालिका परिषद दल्लीराजहरा में आयोजित तिरंगा यात्रा में नगर पालिका अध्यक्ष श्री तोरण साहू, उपाध्यक्ष श्री मनोज दुबे, मुख्य नगर पालिका अधिकारी श्री भूपेन्द्र वाडेकर एवं श्री गोविंद वाधवानी, श्री संजीव सिंह सहित अन्य जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी एवं गणमान्यजन उपस्थित थे।

संक्षिप्त-खबर

गिरहोला में निकाली गयी तिरंगा यात्रा, भारत माता की जय से गूंजा

नंदिनी अहिवारा (समय दर्शन)। आदर्श ग्राम पंचायत गिरहोला में भारतीय सेना के सम्मान में तिरंगा यात्रा निकाली गयी तिरंगा यात्रा ग्राम पंचायत से निकल कर मेन रोड गौठान होते हुए स्कूल पहुंची जोश से भरे स्कूली बच्चों ने भारत माता की जय और वीर जवानों की जय नारा लगाते हुए ग्राम का भ्रमण किया। इस मौके पर सरपंच घनश्याम बंजारे पंच उमेश बंजारे ,हेमन्त कुर्रे, हेमा बंधे, राजेशवरी सोने,भवन कोषरे, आराधना सोने,रमेश राउत रोजगार सहायक, बी.पी. साहू प्रधानपाठक जी,हेमलता ,डिगेशवरी ,पारखी बंजारे, मेठिया बंजारे ,अंजनी, सुनीता सहित ग्रामवाशी उपस्थित रहे।

सैनिकों के सम्मान में निकाली तिरंगा यात्रा

पाटन (समय दर्शन)। ग्राम पंचायत पन्दर में ऑपरेशन सिंदूर के तहत तिरंगा यात्रा निकाला गया जिसमे ग्राम प्रमुख सरपंच उमेश गजेन्द्र उपसरपंच आकाश वर्मा व सचिव भुनेश्वर गजपाल पंच गण दयाशंकर वर्मा रेखा निर्मल रिंकू वर्मा बली राम यादव देवादास रात्रे श्रीमती भानुलता बारले आँचल भारती सरिता वर्मा सनतवर्मा कुमारी आँचल वर्मा श्रीमती द्रौपति वर्मा हरीश नायक ग्राम कोतवाल राजा बया व ग्राम वासी उपस्थित रहे।

अचानकपुर में निकाली तिरंगा यात्रा, भारत माता की जयकारे लगाए, आपरेशन सिंदूर की सफलता का मनाया जश्न

पाटन (समय दर्शन)। जनपद पंचायत पाटन के ग्राम अचानकपुर में आज तिरंगा यात्रा निकाली गई ग्राम पंचायत द्वारा निकाली गई तिरंगा यात्रा में ग्रामीण बड़ी संख्या में शामिल हुए। ऑपरेशन सिंदूर की सफ्लता के बाद यह यात्रा निकाली गई। सैनिकों के सम्मान में साथ ही साथ भारत माता की जयकारे के नारे भी लगाए गए।। इस अवसर पर मुख्य रूप से सरपंच देवानंद साहू, उपसरपंच टिकेश्वर प्रसाद, ग्राम पंचायत के सचिव सहित ग्रामीण महिलाएं पुरुष मौजूद रहे।

कसही में ऑपरेशन सिंदूर की सफ्लता पर निकाली तिरंगा यात्रा

पाटन (समय दर्शन)। ग्राम कसही में ऑपरेशन सिंदूर की सफ्लता पर तिरंगा यात्रा निकाली है। इस अवसर पर सरपंच योगेश्वरी गायकवाड उपसरपंच यमुना यादव पंचगणखोमन, यमुना पटेल, चित्रलेखा, ममता धीवर, देवेन्द्र यादव, महेश सेन, भानमति गायकवाड, रोशनी धीवर सहित अन्य मौजूद थे।

कलेक्टर धमतरी ने पुलिस अधीक्षक की अनुशंसा पर जिले के तीन आदतन अपराधी 1 वर्ष के लिए किया जिला बदर

धमतरी (समय दर्शन)। धमतरी जिले में शांति एवं सुरक्षा व्यवस्था बनाए रखने गुंडा,बदमाशों पर लगातार वैधानिक कार्यवाही की जा रही हैं। कलेक्टर एवं जिला दण्डाधिकारी धमतरी ने पुलिस अधीक्षक धमतरी की अनुशंसा पर वर्ष 2025 में जिले के तीन आदतन अपराधियों को जिला बदर किया गया है। थाना सिटी कोतवाली धमतरी क्षेत्रान्तर्गत के सौरभ सोनी,गौरव मानिकपुरी संतदास मानिकपुरी ये तीनों आरोपी अपने-अपने साथियों के साथ मिलकर छोटी-छोटी बातों पर जान से मारने की धमकी देना,लड़ाई झगड़ा कर मारपीट करना,चाकू तलवार दिखाकर डराना, बलवा करना जैसे अपराधिक कृत्य करते आ रहा है, जो इनके आदत बन गये है।ये तीनों अपराधिक उपद्रवी विध्वंशक प्रवृत्ति के कारण धमतरी शहर के आम जनता में इन लोगों का डर व्याप्त है। छत्तीसगढ़ राज्य सुरक्षा अधिनियम 1990 की धारा 5 (क) (ख) के तहत प्रदत्त का उपयोग करते हुए जिले के 03 और बदमाशों को आगामी 01 वर्ष के लिए जिला धमतरी एवं समीपस्थ जिला रायपुर, बालोद, कांकेर, गरियाबंद, दुर्ग, कोण्डागांव की राजस्व सीमाओं से हट जाने (जिला बदर) का आदेश पारित किया है।

स्वामित्वधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक रोहित खड़तकर द्वारा समय दर्शन प्रिंटर्स एंड पब्लिशर्स ग्राम छाटा, पोस्ट देवादा, तहसील पाटन, जिला दुर्ग (छ.ग.) 491111 से मुद्रित कर बी-4, प्रेस काम्प्लेक्स, इंदिरा मार्केट, दुर्ग छ.ग. 491001 से प्रकाशित। संपादक :- रोहित खड़तकर,
समाचार संपादक : दामोदर राव, फोन नं.-0788-4051213, मो. 9827104452, रायपुर कार्यालय:-0771-4218364, ईमेल - samay.darshan191@gmail.com पं. क्र. CHHHIN/2011/41517 डाक पंजीयन क्रमांक छ.ग./दुर्ग/61/2024-26